हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 26 अक्टूबर 2025

11 मंडियों में बाजरा की पहुंच गेट पास व खरीद की पड़ताल को टीमें गठित

12 350 करोड़ रुपये के बीमा फ्रॉड को लेकर सौंपा ज्ञापन

खबर संक्षेप

मंदिर में चोरी करते हुए युवक काबू, केस दर्ज

लोहारू। उपमंडल के गांव गोठड़ा के बाबा समाध वाले मंदिर में पुजारी की मुस्तैदी से मंदिर के दान पात्र को तोड़कर दान की राशि चोरी का करने वाले युवक को काबू कर लिया गया। आरोपी युवक को पुलिस के हवाले किया गया तथा पुलिस ने मुकदमा दर्ज करके कार्रवाई शुरू कर दी। पुलिस को दी शिकायत में पुजारी उमेद सिंह ने बताया कि बीती देर रात करीब दो बजे से मंदिर के अंदर से आवाजें सुनाई दी। जैसे ही मौके पर पहुंचकर देखा तो एक युवक चिमटे की मदद से दानपात्र को तोड़कर दान की राशि चोरी करने का प्रयास कर रहा था। युवक को मौके पर ही काबू करके सरपंच बलवंत सिंह को सूचना दी गई तथा बाद में पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। बहरहाल पुलिस ने इस मामले में मुकदमा दर्ज करके कार्रवाई शुरू कर दी है।

पांच लोगों पर हमला का आरोप, मामला दर्ज

लोहारू। उपमंडल के गांव बरालु में एक व्यक्ति ने पांच लोगों पर घर में घुसकर हमला करने और धमकी देने का आरोप लगाया है। शिकायत के आधार पर लोहारू थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज करके कार्रवाई शुरू कर दी है। बरालु निवासी सतपाल ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह 21 अक्टूबर को अपने घर पर था तथा इतने में गांव के ही एक परिवार के पांच लोग उसके घर पर आ धमके और लाठी डंडों से हमला कर दिया। आरोप है कि हमले के दौरान सतपाल की पांच हजार रुपये की राशि भी छीन ली गई। हमले के दौरान सतपाल गंभीर रूप से घायल हो गया तथा शोर मचाने पर आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए। लोगों के पहुंचने से हमलावर धमकी देकर मौके से फरार हो गए। घायल सतपाल को लोहारू सीएचसी में दाखिल कराया गया जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे भिवानी रेफर कर दिया। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

बिजली पेंशनर्ज का वार्षिक सम्मान समारोह आज

भिवानी। हरियाणा बिजली पेंशनर्ज वेलफेयर एसोसिएशन भिवानी का वार्षिक सम्मान समारोह आज जाट धर्मशाला में प्रातः 10 से 2 बजे तक आयोजित किया जाएगा। सम्मान समारोह का आयोजन सेवानिवृत अकाउंटेट रविन्द्र शर्मा की अध्यक्षता में किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए एसोसिएशन के जिला प्रधान बालमुकुंद बापोड़ा ने बताया कि सम्मान समारोह में 1958 से 1959 में जन्मे लगभग 65 पुरूष व महिलाओं को सम्मानित किया जाएगा। समारोह में 80 साल से अधिक आयु वाले 11 पुरूष व महिलाओं को सम्मानित किया जाएगा। समारोह में मंच संचालन प्रधान बालमुकुंद बापोड़ा करेंगे। महासचिव आरके चावला व रामेशर गोलागढ़ एसोसिएशन की उपलब्धियों पर प्रकाश डालेंगे।

बीमारी की वजह से घटेगी फसल की औसतन पैदावार

मौसम की मार, धान के दानों पर फंगस का वार, किसान लाचार

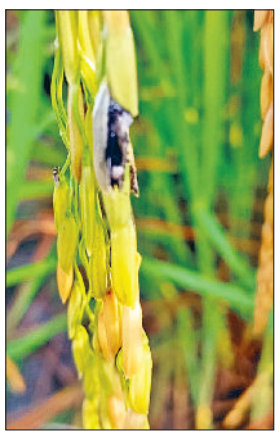

भिवानी। धान की फसल में फंगस की वजह से काला पड़ा व सूखा धान का दाना। *फोटो : हरिभूमि*

मौसम के बदलते मिजाज की वजह से धान की फसल में आई गड़बडी को लेकर किसान चिंतित

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

लगता है कि समस्याएं किसानों के साथ साए की तरह चिपक गई है। पहले बारिश ने किसानों के खेतों में फसलों में डूबोया और अब बदलते मौसम के मिजाज की वजह से धान की फसल फंगस बीमारी की चपेट में आने लगी है। हालांकि अब धान की फसल पकने को तैयार है,लेकिन उसके बावजूद जो धान के दाने पके हुए है। वे फंगस की वजह से काले पड़ने लगे है। अगर यही स्थिति रही तो इस बार धान की औसतन पैदावार में काफी कमी आएगी। फिलहाल मौसम के बदलते मिजाज की वजह से धान की फसल में आई गड़बडी को लेकर किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें साफ झलकने लगी है। अगस्त माह के अंतिम सप्ताह व सितम्बर माह के पहले सप्ताह में हुई तेज बारिश ने किसानों के अरमानों को पानी में डूबो दिया। करीब दो माह का समय बीतने को आया,लेकिन अभी तक किसान अभी इस सदमें से उभरे नहीं थे,लेकिन अब मौसम की मार से किसान परेशान होने लगे है। दिनभर गर्मी तो रात के समय में ठंड होने का असर धान की फसल पर पड़ने लगा है। धान की फसल पकने लगी है,लेकिन मौसम में आए बदलाव की वजह से धान की फसलों में बालियों के दाने काले पड़ने लगे है। उन दानों की जगह काले रंग का बुरादा से निकल रहा है। हालांकि अभी फसलों में इसका ज्यादा असर नहीं है,लेकिन यह रोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अगर इस बीमारी की रोकथाम नहीं की गई तो इस बीमारी से किसानों की फसलों की औसतन पैदावार में काफी नुकसान होगा। किसानों ने बताया कि धान की फसल में यह बीमारी पिछले तीन चार दिन पहले ही पनपी है। अधिकांश धान की फसलों में यह बीमारी देखने को मिल रही है। किसानों का तर्क है कि यह बीमारी फंगस या अन्य किसी जीवाणु से फैलना संभव हो सकता है।

कपास की फसल पहले की खत्म हो चुकी

इस बार आधे से ज्यादा इलाके में कपास की फसल पहले ही खतम हो चुकी है। जिस वक्त तेज बारिश आई थी। उस वक्त कपास की फसल पक रही थी। बाद में जलभराव की वजह से कपास की फसल पानी में ही खतम हो गई। अब थोड़ी बहुत कपास की फसल बची है। उसमें पानी जमा है। उस फसल की न तो चुनाई हो पा रही है और न उन खेतों में बिजाई हो पाएगी। फिलहाल किसान परेशान है।

सड़क दुर्घटना में 68 वर्षीय व्यापारी सिंगला की मौत

■ गांव बीरन के नजदीक अज्ञात वाहन ने दिया हादसे का अंजाम

हरिभूमि न्यूज ⏭ तोशाम

शनिवार दोपहर करीबन 12 बजे तोशाम-भिवानी मार्ग पर गांव बीरन के नजदीक एक सड़क दुर्घटना में तोशाम निवासी 68 वर्षीय मोटरसाइकिल सवार एक व्यक्ति की दर्दनाक मौत हो गई। उल्लेखनीय है कि शनिवार सुबह तोशाम निवासी 68 वर्षीय अशोक सिंगला मोटरसाइकिल पर सवार होकर किसी कार्य से भिवानी गए थे। दोपहर करीबन 12 बजे जब वह मोटरसाइकिल पर सवार होकर भिवानी से तोशाम लौट रहे थे तो गांव बीरन के नजदीक किसी अज्ञात वाहन की चपेट में आने से अशोक सिंगला की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। इसकी सूचना राहगीरों ने पुलिस को दी सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची तथा शव को अपने कब्जे में लेकर भिवानी के सिविल अस्पताल ले जाया गया तत्पश्चात सूचना मिलते ही परिजन भी मौके पर पहुंचे। समाचार लिखे जाने तक शव का पोस्टमार्टम किया जा रहा था। मृतक अशोक सिंगला तोशाम में अपना निजी व्यापार चलाते थे और अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

सीएमओ कार्यालय पर छह नवंबर को होगा जोरदार प्रदर्शन

भिवानी। एनएचएम में कार्यरत महिला एमपीडब्ल्यूएच की मांगे पूरी न होने के विरोध स्वरूप छह नवंबर को सीएमओ कार्यालय पर रोष प्रदर्शन किया जाएगा। संगठन की राज्य प्रधान शर्मिला देवी व जिला प्रधान रविंद्र धोनी ने बताया कि एनएचएमें कार्यरत महिला एमपीडब्ल्यूएच की काफी लंबे समय से जायज मांगों की सरकार की तरफ से अनदेखी की जा रही है। मांगो के ज्ञापन सभी विधायक व सांसदों के द्वारा सरकार के पास भेजे जा चुके हैं, लेकिन सरकार हठधर्मिता पर अड़ी है। इनके विरोध में छह नवंबर को सीएमओ कार्यालय में समस्त एमपीएचई वर्ग रोष प्रदर्शन करेगा।

प्राइवेट स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन करवाएगा खेल महाकुंभ : शर्मा

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

प्राइवेट स्कूल वेलफेयर एसो. 15 व 16 नवंबर को अपना वार्षिक दो-दिवसीय खेल महाकुम्भ का आयोजन करेगा, ये घोषणा एसो. के प्रदेश अध्यक्ष रामअवतार शर्मा ने शनिवार को प्रेस कांफ्रेंस में की। उन्होंने बताया कि एसोसिएशन न सिर्फ स्कूलों के हितों कि रक्षा के लिए कार्य करता है बल्कि बच्चों और टीचर्स के वेलफेयर के लिए भी कार्य करता है और इसी उद्देश्य से ये दो दिवसीय खेल महाकुम्भ का आयोजन हर साल किया जाता है । आयोजन में पहले दिन बच्चों और दूसरे दिन टीचर्स की खेल प्रतियोगिताएं करवाई जाएंगी।

इन प्रतियोगिताओं में दिखाएंगे दमखम

शर्मा ने बताया कि विद्यार्थियों के लिए अंडर 14 व 19 (लड़के और लड़कियां) दो आयु वर्ग में प्रतियोगिताएं होगी। खेल महाकुम्भ के दौरान भिवानी जिले के प्राइवेट स्कूलों में पढ़ रहे बच्चे भाग ले सकेंगे। उन्होंने कहा कि खो-खो, कबड्डी, क्रिकेट, वॉलीबॉल, 100 मीटर रेस, 200 मीटर रेस, 400 मीटर रिले रेस, के साथ साथ अंडर 10 केटेगरी में सैक रेस, बैलून रेस आदि विभिन्न फन रेस भी करवाई जाएगी । सभी विजेताओं को एसोसिएशन की तरफ से मेडल, ट्रॉफी और सर्टिफिकेट दिए जाएंगे। पूरे जिले से करीब 3000 खिलाड़ियों व प्राइवेट स्कूलों के एक हजार से ज्यादा टीचर्स के लिए स्लो साइकिल रेस, बलून रेस, लेमन एंड स्पून रेस, रस्साकस्सी, 100 मीटर रेस, क्रिकेट मैच करवाएं जाएंगे।

अस्पताल में सीएम फ्लाइंग की छापेमारी, कई खामियां मिलीं

हरिभूमि न्यूज ⏭ बाढ़ड़ा

बाढ़ड़ा। अस्पताल पर कार्रवाई के बाद बाहर आती सीएम फालाईंग की टीम

■ अस्पताल में बिना मान्यता के चल रही थी लैब, खून की जांच का कर रहे थे कार्य

सीएम फ्लाइंग टीम ने शुक्रवार को कस्बे के बाढ़ड़ा के जुई रोड स्थित अस्पताल पर छापा मारा। यह कार्रवाई सीएम फ्लाइंग रोहतक प्रभारी सब इंस्पेक्टर पूनम रानी की अगुवाई में की गई। टीम में डॉक्टर दयाल सिंह (सीएमओ कार्यालय चरखी दादरी) और एएसआई सोमबीर सिंह शामिल रहे। रेड के दौरान टीम को अस्पताल में कई खामियां मिलीं। जांच में पाया कि अस्पताल परिसर में बिना मान्यता के लैब चल रही थी, जहां खून की जांच ब्लैड सैंपल, सीबीएस, एलएफटी, केएफटी का काम किया जा रहा था। मौके पर मरीजों की रिपोर्ट रजिस्टर में दर्ज मिलीं। टीम ने जब मालिक विनय कुमार से दस्तावेज मांगे तो उन्होंने डीएमएलटी का सर्टिफिकेट दिखाया, जबकि अस्पताल चलाने के लिए राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त पंजीकरण प्रमाणपत्र (रेजिस्ट्रेशन या बीएमडी1ल्यू सर्टिफिकेट) नहीं दिखाया जा सका। साथ ही यह भी सामने आया कि विनय कुमार के पास बीएएमएस की डिग्री है, जो एलोपैथिक इलाज के लिए मान्य नहीं होती। डॉ. दयाल सिंह की शिकायत पर अस्पताल संचालक के खिलाफ बायोमेडिकल वेस्ट मैनेजमेंट रूल्स 2016 के तहत मामला दर्ज किया गया है। मामले की जांच एएसआई सोमबीर सिंह को सौंपी गई है। सीएम फलाईंग की टीम ने चार घंटे तक की कार्रवाई सीएम फाईंग की ओम करीब 12 बजे कस्बे में पहुंची ओर पहले एक निजी लेब पर गई। इसके बाद करीब दो बजे वह कस्बे के अस्पताल में पहुंची और करीब शाम छह बजे तक कार्रवाई जारी रखी। अंत में टीम ने अस्पताल में मिली खामियों की रिपोर्ट पुलिस को शिकायत में देकर अस्पताल लैब व चिकित्सक के खिलाफ केस दर्ज करवाया।

खेल अनुशासन, एकता व चरित्र निर्माण की पाठशाला: सांसद

लड़कियों के हाई जम्प में नैना प्रथम

■ सांसद खेल महोत्सव में 88 टीमों ने लिया भाग

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखीदादरी

चरखी दादरी। प्रतिभागी टीमों के साथ सांसद धर्मबीर सिंह।

राजकीय वमा विद्यालय रानीला के खेल परिसर में लोकसभा सांसद धर्मबीर सिंह के सौजन्य से सांसद खेल महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। सांसद धर्मबीर सिंह मुख्यतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि दादरी के विधायक सुनील सतपाल सांगवान ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए। खेल महोत्सव में क्षेत्रभर से 88 टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रस्साकशी प्रतियोगिता में बौंद की टीम ने प्रथम, सांवड की टीम ने द्वितीय व रानीला की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। लड़कियों के हाई जंप में नैना रानीला प्रथम रही। वहीं हाई जंप लड़के में अमित भगवी ने बाजी मारी। लड़कियों की 1500 मीटर दौड़ में हीना दादरी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि लड़कों की 100 मीटर दौड़ में मोक्ष और अमित संयुक्त रूप से प्रथम स्थान पर रहे। वहीं कबड्डी, कुश्ती, वॉलीबॉल आदि प्रतियोगिताओं में भी विभिन्न टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूरे आयोजन स्थल पर खेलप्रेमियों की जोशीली भागीदारी देखने को मिली, जिससे वातावरण उत्साह, उमंग व देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत रहा। सांसद धर्मबीर सिंह ने कहा कि सांसद खेल महोत्सव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस संकल्प का सजीव उदाहरण है, जिसके माध्यम से युवाओं को खेलों से जोड़कर उन्हें राष्ट्रनिर्माण, आत्मनिर्भरता और स्वस्थ जीवनशैली की ओर प्रेरित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि "खेल केवल प्रतिस्पर्धा का माध्यम नहीं, बल्कि यह अनुशासन, एकता और चरित्र निर्माण की सर्वोत्तम पाठशाला है। सांसद ने युवाओं से आह्वान किया कि वे खेल भावना, परिश्रम, निष्ठा और राष्ट्रप्रेम को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं तथा हर क्षेत्र में देश और प्रदेश का नाम रोशन करें। इस मौके पर विधायक सुनील सांगवान, भाजपा जिलाध्यक्ष सुनील इंजीनियर, चेयरमैन सुधीर चांदवास, इंद्र फौगाट, संजीत सरपंच तथा जिला खेल अधिकारी विष्णु भगवान आदि उपस्थित थे।

ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे ही पैसे निकालना कितना सही

अपडेट | बिजनेस डेस्क

- पहले सारा पैसा निकालने पर नहीं मिलती मासिक पेंशन, पेंशन के लिए लगातार दस ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी
- ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रहेगी

अगर आप नौकरीपेशा हैं और ईपीएफ (ईपीएम) में योगदान करते हैं, तो आपके वेतन का एक हिस्सा ईपीएस यानी एंप्लाइज पेंशन स्कीम में भी जाता है। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि नौकरी छोड़ने या बीच में ब्रेक आने पर इस पैसे को फौरन निकाल लेना बेहतर है, लेकिन क्या वाकई ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे पैसे निकाल लेना सही फैसला है? कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने हाल ही में ईपीएस से जुड़े कुछ बदलाव किए हैं, हालांकि, इन बदलावों का असर पेंशन पाने की उम्र यानी 58 साल की एलिजिबिलिटी पर नहीं पड़ेगा। पेंशन पाने के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक लगातार ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी है। अगर किसी सदस्य की नौकरी चली जाती है और वह ईपीएस (ईपीएस) के लिए योगदान जारी नहीं रखना चाहता, तो वह 10 साल पूरे होने से पहले अपने सारे पैसे निकाल सकता है. पहले यह फाइनल सेटलमेंट नौकरी चले जाने के 2 महीने बाद किया जा सकता था, लेकिन अब इसके लिए 2 महीने नहीं, बल्कि 36 महीने यानी 3 साल तक इंतजार करना होगा, यानी ईपीएफओ ने अब ईपीएस के पैसे निकालना पहले की तुलना में ज्यादा मुश्किल बना दिया है, इस बदलाव का उद्देश्य यह है कि अगर ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रह सके।

10 साल से पहले पैसे निकालने का असर

ईपीएफओ के नियमों के मुताबिक आप लगातार नौकरी के 10 साल पूरे होने से पहले ईपीएस से पैसे निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसा करने पर आप आगे चलकर मिलने वाली पेंशन के लिए एलिजिबल नहीं रह जाएंगे। यानी रिटायरमेंट के बाद ईपीएस के जरिये मिलने वाली मंथली पेंशन की सुविधा खत्म हो जाएगी।ईपीएफओ के अनुसार रिटायरमेंट के समय पेंशन पाने की एलिजिबिलिटी के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक ईपीएस में सदस्य रहना जरूरी है। इसका मतलब यह है कि जल्दबाजी में पैसे निकालने से आप अपनी लंबी अवधि की आर्थिक सुरक्षा खो सकते हैं।

क्या कहते हैं आंकड़े

दिलचस्प बात यह है कि ईपीएफओ के आंकड़ों के मुताबिक करीब 75 प्रतिशत सदस्य 4 साल की सर्विस के भीतर ही पूरा पेंशन अमाउंट निकाल लेते हैं, ऐसे में उन्हें भविष्य की पेंशन और आर्थिक सुरक्षा का लाभ नहीं मिल पाता है।

फैमिली पेंशन का भी नुकसान

अगर कोई सदस्य 10 साल से पहले पैसे नहीं निकालता है और उसका निधन हो जाता है, तो उसके परिवार को अगले 3 साल तक पेंशन का लाभ मिलता है, लेकिन अगर सदस्य ने पूरे पैसे निकाल लिए हैं, तो परिवार यह लाभ नहीं ले सकता। यही वजह है कि ईपीएफओ ने ईपीएस की सदस्यता को 10 साल पूरे होने तक जारी रखने के लिए नियमों में बदलाव किए हैं। ईपीएफओ का कहना है कि ईपीएस के पैसे निकालने के लिए दो महीने की जगह 36 महीने इंतजार करने का नया प्रावधान इसीलिए लाया गया है ताकि सदस्यों की 10 साल की एलिजिबिलिटी पूरी हो जाए और उनके परिवार को भी पेंशन का लाभ मिल सके।

किन हालात में निकाल सकते हैं पैसे

हालांकि कुछ खास परिस्थितियों में पैसे निकालने का फैसला सही भी हो सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी व्यक्ति की आमदनी अच्छी खासी है या उसने पहले से अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग की हुई है, जिसके चलते वह रिटायरमेंट के बाद रेगुलर इनकम या फेमिली पेंशन पाने के लिए ईपीएस के भरोसे नहीं है, तो जरूरत पड़ने पर अपने पैसे निकाल सकता है। लेकिन जिनकी आय सीमित है और दूसरा कोई रिटायरमेंट प्लान नहीं है, तो उनके लिए ईपीएस को जारी रखना भविष्य की सुरक्षा के लिहाज से बेहतर विकल्प है। ईपीएस पेंशन स्कीम लंबे समय तक आर्थिक सुरक्षा देने के लिए बनाई गई है। अगर आप 10 साल पूरे होने से पहले पैसा निकालते हैं, तो भविष्य में पेंशन नहीं मिलेगी। साथ ही फेमिली पेंशन के तौर पर परिवार को मिलने वाली सुरक्षा का लाभ भी चला जाएगा। इसलिए नौकरी में ब्रेक या अस्थायी परेशानी की हालत में जल्दबाजी करने की बजाय सोच-समझकर फैसला करने में ही समझदारी है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वालों के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है
- पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12% पैसा सोने में निवेश करते थे
- अब बाजार की तेजी को देखते हुए निवेशक 18 से 22% सोने में निवेश करने लगे

गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला
जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती जाती है

सोने में निवेश सबसे सुरक्षित, लेकिन जरूरत से ज्यादा भी ठीक नहीं

सोने को शुरू से ही निवेश का सबसे सुरक्षित माध्यम माना जाता रहा है। इसने निवेशकों को कभी रुसवा नहीं किया। पिछला रिकॉर्ड देखा जाए तो सोने ने कभी भी निगेटिव रिटर्न नहीं दिया। यह चाहे किसी भी रूप में हो निवेशकों को मालामाल करता रहा है। हालांकि बाजार के जानकारों का कहना है कि सोने में निवेश करना सही है, लेकिन यह जरूरत से ज्यादा नहीं होना चाहिए। हाल फिलहाल में सोने में हुई बढ़ोतरी को देखते हुए निवेशकों ने अपने पोर्टफोलियो में इसकी हिस्सेदारी बढ़ा दी है। पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12 फीसदी पैसा सोने में निवेश करते थे, लेकिन अब निवेशक 18 से 22 फीसदी सोने में निवेश करने लगे हैं। यहां तक तो ठीक हैं, लेकिन इससे अधिक रिस्की हो सकता है। इस साल आई जबर्दस्त तेजी की वजह से सोना चर्चा में है। 21 अक्टूबर को 5 फीसदी की गिरावट के बावजूद गोल्ड ने निवेशकों को मालामाल किया है। सवाल है कि आखिर गोल्ड में इतनी तेजी की क्या वजह है? इस सवाल का जवाब पाने के लिए हमें ग्लोबल इकोनॉमी में गोल्ड की भूमिका को समझना होगा।

1944 का ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट

सेकेंड वर्ल्ड वॉर के बाद 1944 में ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट हुआ। तब अमेरिकी डॉलर में दुनिया के दूसरे देशों की करेंसीज की कीमत तय करने पर सहमति बनी। डॉलर की कीमत गोल्ड पर आधारित थी। 35 डॉलर एक औंस सोने के बराबर था। इस व्यवस्था से ग्लोबल इकोनॉमी को तब स्थिरता मिली, जब उसे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। लेकिन, अमेरिकी इकोनॉमी का आकार बढ़ने पर सरकार ने ज्यादा डॉलर छापे। एक समय ऐसा आया जब कुल डॉलर का मूल्य गोल्ड रिजर्व से ज्यादा हो गया।

1960 के दशक में एक कमोडिटी के रूप में उभरा गोल्ड

1960 का दशक आते-आते इस असंतुलन की अनदेखी करना मुश्किल हो गया। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन ने एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने डॉलर को गोल्ड में बदलने की सुविधा बंद कर दी, जिससे ब्रेटन वुड्स सिस्टम खत्म हो गया। इससे मॉनेटरी सिस्टम में गोल्ड की तय भूमिका खत्म हो गई। इसके बाद गोल्ड एक कमोडिटी बनकर रह गया। इसकी कीमतों पर मार्केट फोर्सेज का असर पड़ना शुरू हो गया, लेकिन, निवेश के सुरक्षित विकल्प को लेकर इसकी भूमिका बनी रही।

केंद्रीय बैंकों ने समझा गोल्ड का महत्व

जैसे-जैसे डॉलर कमजोर होता गया और इनफ्लेशन बढ़ता गया, वैसे-वैसे गोल्ड की अपील बढ़ती गई। जब कभी डॉलर में बड़ी कमजोरी आई या इनफ्लेशन में उछाल आया, गोल्ड निवेश के भरोसेमंद जरिया के रूप में सामने आता रहा। क्राइसिस के समय भी इसकी चमक बनी रही। इससे यह माना गया कि जब सबकुछ अनिश्चित दिख रहा तो तब भी गोल्ड में वेल्थ

की वैल्यू घटने से बचाने की क्षमता है। इसके बाद दुनिया के केंद्रीय बैंकों ने गोल्ड खरीदना शुरू कर दिया। इसका मकसद विदेशी मुद्रा भंडार का डायवर्सिफिकेशन था।

गोल्ड में तेजी की बड़ी वजहें

बीते कुछ सालों में गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला है। जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती है। इससे यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वाले इनवेस्टर्स के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है। बॉन्ड्स की रियल यील्ड ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई। जब रियल यील्ड घट जाती है तो गोल्ड की अपील बढ़ जाती है। जब हम साल 2025 के अंत के करीब है, गोल्ड 4000 डॉलर प्रति औंस से ऊपर है। गोल्ड की तेजी में डॉलर में कमजोरी, बॉन्ड्स की कम रियल यील्ड और सेंट्रल बैंकों के बीच गोल्ड की ज्यादा डिमांड का हाथ है। इसके अलावा जियोपॉलिटिकल टेंशन का असर भी इसमें शामिल है।

इकोनॉमी में गोल्ड की बढ़ती भूमिका

गोल्ड में तेजी न सिर्फ इनवेस्टर्स के लिए अहम है बल्कि इसका आर्थिक महत्व भी है। उदाहरण के लिए भारत में आरबीआई के रिजर्व में डॉलर के अलावा गोल्ड भी है। जब गोल्ड में तेजी आती है तो आरबीआई के डॉलर रिजर्व की वैल्यू बढ़ जाती है। इससे इंडिया की फाइनेंशियल पोजीशन मजबूत होती है। गोल्ड का असर भारत में कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स (सीपीआई) पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए सितंबर 2025 में गोल्ड की ज्यादा कीमतों की वजह से इंडिया के कोर इनफ्लेशन में मामूली उछाल देखने को मिला, जबकि फूड की कीमतों में गिरावट आई। इससे पता चलता है कि गोल्ड की भूमिका इकोनॉमी में कितनी ज्यादा है।

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद है। इसकी कई वजहें हैं। रियल यील्ड लगातार कम बनी हुई है। सेंट्रल बैंक के बीच गोल्ड की डिमांड बनी हुई है, लेकिन, इतिहास यह बताता है कि ऐसी तेजी के बाद गोल्ड दोबारा नई ऊंचाई पर पहुंचने से पहले कंसॉलिडेशन फेज में रहता है। इसलिए गोल्ड में तेजी जारी रहने की संभावना है, लेकिन इनवेस्टर्स को इसमें उतार चढ़ाव के लिए तैयार रहना चाहिए।

एक सीमा से ज्यादा निवेश सही नहीं

कई इनवेस्टर्स इनफ्लेशन से बचाव, करेंसी में कमजोरी और ग्लोबल इकोनॉमी में अनिश्चितता को देखते हुए गोल्ड में निवेश कर रहे हैं। लेकिन, गोल्ड में बहुत ज्यादा निवेश से आपके पोर्टफोलियो पर इसकी कीमतों में तेजी या कमजोरी का असर पढ़ना शुरू हो जता है। ऐसे में बॉन्ड बड़ा रोल निभाता है। अनिश्चित समय में तो गोल्ड का प्रदर्शन अच्छा रहता है लेकिन, जब सबकुछ ठीक चल रहा होता है तो क्या होता है? बॉन्ड्स पोर्टफोलियो में स्टैबिलिटी लाता है। साथ ही इंटरेस्ट के रूप में इससे रेगुलर इनकम होती है। यह फायदा गोल्ड में नहीं है। ऐसे इनवेस्टर्स जिन्हें रेगुलर कैश की जरूरत पड़ती है, उनके डायवर्सिफायड पोर्टफोलियो में बॉन्ड्स का होना जरूरी है।

ऑफर देखकर न ललचाएं ज्यादा जरूरत होने पर ही पर्सनल लोन उठाएं, वरना यह बढ़ा सकता है परेशानी

पर्सनल लोन एग्रीमेंट पर साइन से पहले चेक करें कुछ बातें, वरना पड़ेगा पछताना

बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं जो करती हैं परेशान, ऐसे में ऐसी शर्तों पर पहले से ही नजर दौड़ा लें, दिक्कत नहीं होगी

अलर्ट | बिजनेस डेस्क

कई बार हमें अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है चाहे मेडिकल इमरजेंसी हो, शादी का खर्च या फिर किसी जरूरी ट्रिप का खर्चा। ऐसे में पर्सनल लोन एक आसान रास्ता लगता है। कुछ क्लिक या एक फॉर्म भरकर पैसा खाते में आ जाता है, लेकिन यही आसानी कई बार बाद में परेशानी का कारण भी बन जाती है, अगर आपने लोन एग्रीमेंट के कागजों को ध्यान से नहीं पढ़ा। बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं, जिन पर नजर न गई तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

प्रीपेमेंट और फोरक्लोजर चार्जेज

कई लोग सोचते हैं कि लोन जल्दी चुका देंगे तो ब्याज बच जाएगा, लेकिन हर बैंक या फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन इसकी इजाजत नहीं देता। अगर आप लोन तय समय से पहले चुका देते हैं, तो आपको प्रीपेमेंट या फोरक्लोजर चार्जेज देने पड़ सकते हैं, जो आम तौर पर बाकी बचे लोन अमाउंट का 2% से 5% तक होता है। इसलिए साइन करने से पहले यह जरूर समझ लें कि आपका बैंक या एनबीएफसी पर्सनल लोन जल्दी चुकाने पर कितने चार्जेज वसूलेगा।

लेट पेमेंट और डिफॉल्ट पेनॉल्टी

एक भी ईएमआई छूटना आपके क्रेडिट स्कोर को नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन इसके साथ ही, बैंक लेट पेमेंट पर पेनाल्टी चार्ज भी वसूलते हैं। कुछ बैंक एक तय रकम लेते हैं, तो कुछ बाकी बचे ईएमआई अमाउंट का एक प्रतिशत। यही वजह

है कि देर से भुगतान करने पर ब्याज से ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है। इससे बचने का सबसे आसान तरीका है ऑटो डेबिट ऑर्डर लगाना, ताकि ईएमआई समय पर कट जाए।

छिपे हुए प्रोसेसिंग व सर्विस चार्जेस

बैंक जब लोन का ब्याज दर बताते हैं, तो वह तो साफ होता है, लेकिन बाकी के चार्जेस अक्सर ध्यान नहीं जाते। जैसे प्रोसेसिंग फीस, डॉक्युमेंटेशन फीस और जीएसटी आदि। यहां तक कि कुछ बैंक फोरक्लोजर लेटर या लोन स्टेटमेंट के लिए भी शुल्क वसूलते हैं। इसलिए हमेशा साइन करने से पहले बैंक से यह पूछें कि कुल मिलाकर आपकी जेब से कितनी रकम कटेगी। आखिरकार, जो लोन अमाउंट आपको मिलेगा, वह इन चार्जेस के बाद थोड़ी कम ही होगी।

ब्याज दर में बदलाव से जुड़ी शर्तें

अगर आपने फ्लोटिंग रेट वाला पर्सनल लोन लिया है, तो यह समझना जरूरी है कि ब्याज दर में बदलाव कब और कैसे होगा। कुछ बैंक हर तिमाही में रेट बदलते हैं, तो कुछ साल में एक बार. अगर ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आपकी ईएमआई भी बढ़ सकती है। इसलिए एग्रीमेंट में दिए गए इस क्लॉज को जरूर पढ़ें ताकि बाद में बढ़ी हुई किस्त देखकर झटका न लगे।

बीमा और क्रॉस-सेलिंग की चाल

कई बैंक पर्सनल लोन के साथ एक बीमा पॉलिसी भी जोड़ देते हैं, जो बेरोजगारी, बीमारी या मृत्यु की स्थिति में लोन को कवर करती है। सुनने में यह सुरक्षा जैसा लगता है, लेकिन अक्सर यह बीमा वैकल्पिक होता है. कुछ बैंक इसे अनिवार्य बताकर जोड़ देते हैं। इसलिए साइन करने से पहले यह साफ कर लें कि क्या यह बीमा जरूरी है, और क्या उसकी प्रीमियम लागत वाजिब है।

हर शर्त को समझना बेहद जरूरी

पर्सनल लोन एक सुविधाजनक विकल्प जरूर है, लेकिन इसके साथ जुड़ी हर शर्त को समझना बेहद जरूरी है। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान न देने से बाद में भारी ब्याज, चार्जेस या अन्य पेनाल्टी झेलनी पड़ सकती है। इसलिए अगली बार जब भी आप किसी लोन डॉक्यूमेंट पर साइन करें, तो जल्दबाजी न करें। हर पेज, हर क्लॉज को ध्यान से पढ़ें और समझें। आखिरकार, लोन से राहत तभी मिलेगी जब आप इसके हर नियम को समझदारी से निभाएंगे।

घर में कितनी रख सकते हैं चांदी कमाई पर कैसे लगता है टैक्स

बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में सोना के साथ एक और एसेट क्लास सबसे ज्यादा चर्चा में है, जो है चांदी। वजह इसमें मिल रहा सुपर रिटर्न। साल 2025 में रिटर्न के मामले में चांदी ने सोने को पीछे छोड़ दिया है। इस साल चांदी का रिटर्न 73फीसदी से अधिक रहा है। इससे निवेशकों के बीच चांदी की डिमांड बढ़ रही है, चाहे वह किसी भी फॉर्मेट में हो। तो यहां 2 बातें समझ लेना जरूरी है कि आप अपने घर में अधिक से अधिक कितना चांदी रख सकते हैं, ताकि इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का कोई झंझट न हो। वहीं इससे होने वाली कमाई पर कितना टैक्स लगता है।

चांदी रखने पर लिमिट नहीं

सोने की तरह, चांदी (जैसे सिक्के, गहने, बर्तन आदि) रखने पर इनकम टैक्स एक्ट, 1961 के तहत कोई सीमा तय नहीं की गई है। अगर चांदी कानूनी तरीके से खरीदी गई या विरासत में मिली है, तो उस पर कोई रोक नहीं है। टैक्स तभी लगता है जब आप चांदी बेचते हैं और उस पर कैपिटल गेंस (लाभ) कमाते हैं। टैक्स सिर्फ बिक्री पर या छुपाई गई संपत्ति पाए जाने पर लगता है। हालांकि घर पर कितनी भी चांदी रखने की सीमा नहीं है, लेकिन अगर आपके पास ज्यादा चांदी है, तो उसकी खरीद के प्रमाण (बिल या रसीद) संभाल कर रखना बेहतर है। अगर आपने चांदी किसी ज्वेलर, डीलर या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से खरीदी है, तो उसका असली बिल जरूर रखें। भविष्य में अगर कभी इनकम टैक्स विभाग जांच करता है, तो ये दस्तावेज आपके लिए सुरक्षा कवच बन सकते हैं।

चांदी की कमाई पर टैक्स

चांदी पर टैक्स के नियम की बात करें तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने फिजिकल सिल्वर (जैसे गहने, सिक्के, बार) खरीदी है या सिल्वर ईटीएफ या सिल्वर म्यूचुअल फंड में निवेश किया है, और आपने इसे कितने समय तक रखा है. इसलिए, टैक्स के नियम समझना जरूरी है ताकि आप सही निवेश निर्णय ले सकें।

फिजिकल फार्म में चांदी पर टैक्स

अगर आपने चांदी के गहने या सिक्के को 24 महीने से पहले बेच दिया, तो उस पर हुआ लाभ शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेंस (एसटीसीजी) माना जाएगा और यह आपकी इनकम टैक्स स्लैब की दर के अनुसार टैक्स होगा, लेकिन आपने चांदी को 24 महीने से ज्यादा समय तक रखा, तो यह लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस (एलटीसीजी) माना जाएगा। अगर चांदी 23 जुलाई 2024 या उसके बाद खरीदी गई है, तो इस पर 12.5% टैक्स लगेगा और इंडेक्सेशन का लाभ नहीं मिलेगा। वहीं 23 जुलाई 2024 से पहले खरीदी चांदी पर 20% लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगेगा इंडेक्सेशन के साथ।

सिल्वर म्यूचुअल फंड और ईटीएफ पर टैक्स

अगर आपने सिल्वर ईटीएफ या म्यूचुअल फंड को 12 महीने के अंदर बेचा, तो यह एसटीसीजी माना जाएगा और इनकम टैक्स स्लैब रेट के हिसाब से टैक्स लगेगा। अगर 12 महीने से बाद बेचा, तो यह एलटीसीजी माना जाएगा और 12.5% टैक्स लगेगा, बिना इंडेक्सेशन बेनेफिट के।

चांदी की ज्वेलरी, बिस्कुट और सिक्कों पर टैक्स

चांदी (बार, सिक्के या गहने) के मूल्य पर 3 फीसदी जीएसटी लगता है, जबकि गहनों के मेकिंग चार्ज पर 5 फीसदी जीएसटी लगाया जाता है।

यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे

यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये भी कर सकेंगे पेमेंट

जानकारी | बिजनेस डेस्क

अब तक आपने म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल सिर्फ निवेश और रिटर्न कमाने के लिए किया होगा, लेकिन अब इसका इस्तेमाल पेमेंट करने में भी किया जा सकेगा। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) के नए फीचर 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये अब निवेशक यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे। यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि निवेशकों को बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका भी देता है। यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' इस फीचर के जरिए आप अपनी लिक्विड म्यूचुअल फंड होल्डिंग से सीधे यूपीआई पेमेंट कर पाएंगे। मिसाल के तौर पर अगर आपने किसी फंड हाउस के लिक्विड फंड में निवेश किया है, और वह फंड इस सुविधा को सपोर्ट करता है, तो आप अपने उस निवेश का इस्तेमाल यूपीआई के जरिये किसी पेमेंट के लिए कर पाएंगे। जैसे ही आप यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी और पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे। इसे इस तरह समझिए कि यह फीचर लिक्विड म्यूचुअल फंड को एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करने की क्षमता देता है, लेकिन फर्क यह है कि यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है। इस सुविधा को फिलहाल आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड

क्यों खास है यह फीचर

लिक्विड फंड शॉर्ट-टर्म मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं, जिनकी लिक्विडिटी बहुत ज्यादा होती है। ऐसे में जब जरूरत पड़े, तो निवेशक फौरन पैसे निकाल सकते हैं। अब 'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर से यह प्रॉसेस और आसान हो गई है, क्योंकि अब आपको पहले पैसा बैंक अकाउंट में ट्रांसफर करने की जरूरत नहीं। इसके अलावा यह फीचर आपके निवेश पर फुल लिक्विडिटी के बावजूद सेविंग अकाउंट से ज्यादा संभावित रिटर्न का फायदा भी देता है। सेविंग अकाउंट में जहां आम तौर पर 4% से कम सालाना ब्याज मिल रहा है, वहीं लिक्विड फंड इस समय करीब 6-7% तक का रिटर्न दे रहे हैं। यानी आपका पैसा बेकार पड़े रहने की बजाय बेहतर रिटर्न भी दे सकता है और जरूरत पर फौरन काम भी आ सकता है।

ऐसे आसान होगा पेमेंट

यूपीआई आज हर रोजमर्रा के लेनदेन का हिस्सा बन चुका है। किराने की दुकान से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग तक, हम सभी इसका इस्तेमाल करते हैं। अब अगर यह पेमेंट सीधे म्यूचुअल फंड से हो जाए, तो आपको अलग-अलग ऐप्स में ट्रांसफर या रिडेम्पशन की झंझट

- यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका देगा
- जैसे ही यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी
- पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे,

नहीं झेलनी पड़ेगी। व्यक्तिगत निवेशकों के साथ-साथ छोटे बिजनेस के लिए भी यह फीचर बहुत मददगार साबित हो सकता है। वे अपने शॉर्ट-टर्म कैश को लिक्विड फंड में रखकर रिटर्न कमा सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उसी से पेमेंट कर सकते हैं। यह कैश मैनेजमेंट का स्मार्ट और फ्लेक्सिबल तरीका है।

क्या यह सेविंग से बेहतर है?

कई मामलों में हां, लेकिन कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं। सेविंग अकाउंट ज्यादा सुरक्षित होते हैं और उनमें 5 लाख रुपये तक के डिपॉजिट का इंश्योरेंस भी होता है। वहीं, लिक्विड फंड में थोड़ा मार्केट रिस्क रहता है. हालांकि यह रिस्क बहुत कम होता है, फिर भी अगर आपका लक्ष्य केवल सुरक्षा है, तो सेविंग अकाउंट ही बेहतर है।लेकिन अगर आप थोड़ा जोखिम लेने को तैयार हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा फुल लिक्विडिटी के बावजूद बेहतर रिटर्न कमाए, तो नई सुविधा आपके लिए सही विकल्प हो सकती है। हां, यह ध्यान रखना जरूरी है कि आप जिस फंड में निवेश करें, उसकी लिक्विडिटी और रिडेम्पशन प्रोसेस भरोसेमंद हो।

यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन

'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर निवेशकों के लिए सुविधा और रिटर्न दोनों को जोड़ता है। यह दिखाता है कि भारत में डिजिटल पेमेंट और लिक्विड म्यूचुअल फंड एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करेगा
- यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है,
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड और बजाज फिनसर्व एएमसी जैसे फंड हाउसेज ने लॉन्च किया

म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री कितनी तेजी से एक-दूसरे के करीब आ रही है। जो निवेशक अपने पैसों को हर वक्त रिटर्न के लिहाज से इनवेस्ट रखना चाहते हैं, उनके लिए यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन बन सकता है। बशर्ते वे इसके फायदों और रिस्क को समझकर इसका इस्तेमाल करें।

अच्छी तरह समझने के बाद करें इस्तेमाल

भले ही यह फीचर बेहद सुविधाजनक है, लेकिन निवेशकों को इसका इस्तेमाल करने से पहले कुछ बातें जरूर समझ लेनी चाहिए। लिक्विड फंड के रिटर्न अलग-अलग फंड हाउस में अलग-अलग हो सकते हैं, इसलिए औसत रिटर्न और एक्सपेंस रेशियो पर नजर रखना चाहिए. साथ ही यह जानना भी जरूरी है कि "इंस्टैंट रिडेम्पशन" के साथ भी कुछ लिमिट्स या कट-ऑफ टाइम जुड़े हो सकते हैं। इसके अलावा, लिक्विड फंड से होने वाली कमाई पर टैक्स उसी तरह लगता है जैसे बैंक ब्याज पर. इसलिए इसे पूरी तरह इमरजेंसी फंड का विकल्प न मानें। अपने पैसे का कुछ हिस्सा हमेशा सेविंग अकाउंट में भी रखें ताकि किसी देरी की स्थिति में परेशानी न हो।

खबर संक्षेप

खेल महोत्सव में विजेता रहे खिलाड़ियों को किया पुरस्कृत

नांगल चौधरी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देशानुसार आयोजित सांसद खेल महोत्सव में कस्तुरबा गांधी बालिका स्कूल का प्रदर्शन सहरानीय रहा है। विजेता प्रतिभागियों को सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह ने स्मृति चिह्न और प्रशंसा पत्र भेजकर सम्मानित किया है। साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को खेल प्रतिभा निखारने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने कहा कि खेल और शारीरिक स्वास्थ्य का गहरा संबंध है। खेलों में अव्वल रहने वाले युवा पढ़ाई और सामाजिक कार्यों में भी टॉपर रहते हैं। इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर सांसदों ने विधानसभा स्तर पर खेल प्रतियोगिताएं कराई थी।

राव नरेंद्र की छवि खराब कर रही भाजपा सरकार

नारनौल। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह के खिलाफ राजनीतिक षड्यंत्र के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है तथा उनकी छवि को खराब करने के लिए भाजपा सरकार द्वारा यह साजिश रची गई है। उक्त आरोप लगाते हुए वरिष्ठ कांग्रेसी नेता राव होशियार सिंह ने शनिवार को प्रेस के नाम जारी बयान में बताया कि जो केस पिछले 12 वर्षों से निष्क्रिय पड़ा था, उसे अब अचानक सक्रिय किया जाना भाजपा की बौखलाहट और प्रतिशोध की राजनीति को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि सरकार के दबाव में बिना किसी नोटिस के यह कार्रवाई भाजपा की घबराहट को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि हाल ही कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किए गए राव नरेंद्र सिंह को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से यह कार्रवाई की जा रही है, क्योंकि राव नरेंद्र ने जिस सशक्त और अनुशासित कार्यशैली का परिचय दिया है, उससे भाजपा सरकार स्पष्ट रूप से विचलित हुई है। भाजपा शासन में जनता सुरक्षित नहीं है। आज भाजपा शासन में हरियाणा की जनता त्राहिमाम है।

पशुओं को रोग से बचाने के लिए टीकाकरण अभियान

मंडी अटेली। गांव राजपुरा में पशुओं को गलगोटू और मुंह-खुर रोग से बचाने के लिए टीकाकरण अभियान चलाया गया। यह अभियान उपनिदेशक पशुपालन एवं डेयरी विभाग डॉ. नसीब सिंह और उपमंडल अधिकारी डॉ. रोहताश यादव के दिशा-निर्देशानुसार संचालित किया जा रहा है। इस अवसर पर पूर्व सरपंच पप्पू ने अपनी पूरी डेयरी में टीकाकरण करवाया। उन्होंने बताया कि वह हर साल अपने पशुओं का नियमित टीकाकरण करवाते हैं, ताकि पशु स्वस्थ रहें और किसी प्रकार की बीमारी का खतरा न रहे। उन्होंने कहा कि इस टीकाकरण से न तो दूध उत्पादन पर कोई प्रभाव पड़ता है और न ही गर्भधारण पर। इस मौके पर डॉ. राजीव रोहिल्ला (पशु चिकित्सक), इंद्राज सिंह, अजय कुमार, भूपेंद्र कुमार,अंकित, हेमंत व अंकुर आदि उपस्थित थे।

युवाओं का आरोप, इस क्षेत्र के नेता आपसी राजनीति में उलझे युवाओं की आवाज नहीं पहुंचा पा रहे मुख्यमंत्री तक

सीईटी करेक्शन पोर्टल की अंतिम तिथि बढ़ी, दक्षिणी हरियाणा के युवाओं को नहीं मिल पाया फायदा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग ने सीईटी 2025 परीक्षा के लिए आवेदन में सुधार का एक और मौका युवाओं को दिया है। आयोग द्वारा खोला गया करेक्शन पोर्टल पहले 17 से 24 अक्टूबर तक खुला था जिसे अब बढ़ाकर 28 अक्टूबर तक कर दिया गया है। इस पोर्टल के जरिए उम्मीदवार अपनी व्यक्तिगत जानकारी और श्रेणी में सुधार कर सकते थे लेकिन इस सुविधा का लाभ दक्षिणी हरियाणा के युवाओं को लगभग नहीं मिल पाया। कई युवाओं ने नाराजगी जताते हुए

सरल पोर्टल की खामी से कास्ट सर्टिफिकेट नहीं बन पाए, अब भुगतना पड़ रहा खामियाजा

हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग की शर्त से युवाओं की बढ़ी परेशानी

सीईटी करेक्शन पोर्टल खुलने से भी नहीं मिल रही राहत, 14 जून तक के दस्तावेज ही मान्य

जाति सर्टिफिकेट से वंचित अभ्यर्थियों ने 'मजबूरन' सामान्य श्रेणी में किया आवेदन

केवल 14 जून तक बने दस्तावेज ही स्वीकार्य

नारनौल। 20 अक्टूबर को प्रकाशित समाचार। फोटो : हरिभूमि

बताया कि करेक्शन पोर्टल खोलने के बावजूद उन्हें कैटेगरी बदलने में कोई मदद नहीं मिली। प्रदीप कुमार, अंकित कुमार, अमित, योगेश कुमार और सुदेश कुमार ने बताया कि फॉर्म भरते समय सरल पोर्टल बार-बार हैंग हो रहा था जिसके कारण कई युवाओं के जाति प्रमाण पत्र समय पर जारी नहीं हो पाए। परिणामस्वरूप उन्हें फॉर्म जनरल कैटेगरी में भरना पड़ा। जबकि वे आरक्षित श्रेणी में आते है। अब जब करेक्शन का मौका मिला तो उसमें भी नियम इतना सख्त रखा गया कि बहुत से युवा पात्र नहीं हो सके।

यह नियम आया आड़े

आयोग ने निर्देश दिया है कि केवल वही उम्मीदवार कैटेगरी सुधार सकते है जिनका जाति प्रमाण पत्र 14 जून 2025 से पहले का बना हुआ हो। इस शर्त के चलते हजारों उम्मीदवार बाहर हो गए। युवाओं ने कहा कि सरकार ने करेक्शन पोर्टल तो खोला लेकिन शर्तें इस तरह रखी कि वास्तव में किसी को फायदा नहीं हुआ।

सीएससी संचालक भी हो रहे परेशान

सीएससी संचालक सुदेश कुमार मंढाणा, हरिओम यादव कोजिंदा, राकेश कुमार मंढाणा, प्रदीप कुमार मुलोदी, ऋषिदेव भोजावास, अजित कुमार आकोली, नीरज भुंगारका, प्रवीण कुमार भोजावास, अंशु यादव ढाणी बाठोठा, हितेश कुमार सेका और नितेश कादिपुरी ने बताया कि रोजाना अनेक युवा सीएससी केंद्रों पर कैटेगरी सुधार से जुड़ी जानकारी लेने आते है लेकिन सिस्टम में बदलाव की कोई सुविधा नहीं है। युवाओं का कहना है कि सरकार को कम से कम प्रमाण पत्र की तारीख की शर्त में ढील देनी चाहिए थी।

दक्षिणी हरियाणा के युवाओं में रोष बढ़ा

हरिभूमि टीम ने जब इस मुद्दे पर दक्षिणी हरियाणा के अलग-अलग गांवों के युवाओं से बातचीत की तो पता चला कि सबसे ज्यादा शिकायतें इसी क्षेत्र से आ रही है। कई युवाओं का कहना है कि सरकार और स्थानीय नेतृत्व ने इस क्षेत्र के अभ्यर्थियों की समस्याओं को गंभीरता से नहीं लिया। उनका आरोप है कि यदि इस क्षेत्र के नेताओं ने समय रहते आवाज उठाई होती तो आयोग को नियमों में कुछ राहत देनी पड़ती। युवाओं का मानना है कि दक्षिणी हरियाणा के राजनीतिक प्रतिनिधियों का प्रभाव मुख्यमंत्री तक कमजोर पड़ गया है।

अब युवाओं की नजर 28 अक्टूबर पर

हालांकि आयोग ने करेक्शन पोर्टल की अंतिम तिथि 28 अक्टूबर तक बढ़ा दी है लेकिन युवाओं को अब भी उम्मीद कम ही है। उनका कहना है कि जब तक सरकार प्रमाण पत्र की तारीख से जुड़ी शर्त में ढील नहीं देती तब तक यह विस्तार केवल औपचारिकता रहेगा। दक्षिणी हरियाणा के युवाओं का यह भी कहना है कि यदि उनकी समस्या का समाधान नहीं हुआ तो आने वाले समय में वे संगठित होकर आंदोलन का रास्ता अपना सकते है।

सस्पेंड किए गए सचिव मार्केटिंग बोर्ड पंचकूला में देंगे हाजिरी

पैसे लेकर गेट पास व 'जे' फार्म जारी करने के आरोप में मार्केट कमेटी सचिव सस्पेंड

- ई-खरीद पोर्टल और मार्केट कमेटी के एच-रजिस्टर की ऑक्शन में भी मिला अंतर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

बाजरे की खरीद में कथित तौर पर बरती जा रही अनियमितताओं को लेकर प्रदेश के सीएम नायब सिंह सैनी के निर्देश पर मार्केटिंग बोर्ड के मुख्य प्रशासक मुकेश आहूजा ने कनीना मंडी के ईओ कम सचिव मनोज पाराशर को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया है। उनके स्थान पर नारनौल कार्यालय में कार्यरत असिस्टेंट सेक्रेटरी अजीत सिंह को नियुक्त किया गया है। जिन्होंने शुक्रवार रात्रि करीब 10 बजे ज्वाइन भी कर लिया है। जारी किए गए सस्पेंशन ऑर्डर के मुताबिक इस दौरान सचिव मनोज पराशर बोर्ड मुख्यालय पंचकूला में हाजिरी देगें। बता दें कि नई अनाज मंडी चेलावास में बिना बाजरा लाए एक सौ रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से वसूली कर गेटपास सहित जे फार्म जारी किए जाने के आरोपों को लेकर मार्केटिंग बोर्ड की तीन सदस्यीय टीम ने मंडी पहुंचकर जांच करनी चाही, जिसकी सूचना

कनीना। अनाज मंडी के बाहर बाजरे से लदे वाहन। फोटो : हरिभूमि

मिलते ही मार्केट कमेटी कर्मचारी तथा खरीद कर रहे व्यापारी अपने रिकार्ड का थैला लेकर मौके से खिसक गए। इस कार्य में सचिव के अलावा एमएस व ओआर भी शामिल बताए जा रहे हैं। ई-खरीद पोर्टल और मार्केट कमेटी के एच-रजिस्टर की ऑक्शन में अंतर पाए जाने तथा गेट पास जारी करने की प्रक्रिया में अनियमितताएं सामने आने के बाद यह कार्रवाई की गई है। टीम ने ऑनलाइन डाटा के हिसाब से रिकार्ड वेरीफाई करना चाहा। लेकिन मौके पर बाजरे की पीवी भी पूरी नहीं हो सकी। ई-खरीद पोर्टल व एच रजिस्टर में डाटा मैच नहीं करने पर टीम ने उच्च अधिकारियों को रिपोर्ट भेजी। इस रिपोर्ट पर संज्ञान लेते हुए मुख्यमंत्री ने सस्पेंड करने के आदेश जारी किए। मार्केट कमेटी के सचिव के निलंबित होने की सूचना मिलने के बाद कार्यालय कर्मचारियों में भय उत्पन्न हो गया। मार्केट कमेटी द्वारा दो धर्मकाटा में एक की चालू हालत में मिला। मंडी के बाद बाजरे से लदे वाहनों की कतार लगी हुई थी।

प्राइवेट एजेंट कम रेट पर कर रहे बाजरे की खरीद

मंडी में नियुक्त किए गए सचिव अजीत सिंह ने बताया कि शुक्रवार तक कनीना अनाज मंडी में 95 लाख क्विंटल बाजरे की खरीद की जा चुकी है। सरकारी खरीद न होने की वजह से मंडी में करीब 15 एक्टिव प्राइवेट खरीद एजेंट 1850 से 1950 रुपये प्रति क्विंटल की दर से बाजरे की खरीद कर रहे हैं। प्रारंभिक रूप से नियुक्त की गई एजेंसी हैफेड के अधिकारी बदरंग होने की वजह से बाजरे की सरकारी खरीद नहीं कर रहे हैं। उनकी ओर से रेवाडी लैब में बाजरे के सैंपल भेजे जा रहे हैं। जो गुणवत्ता मानकों पर खरे नहीं उतर पा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मंडी में बिजली-पानी की समुचित व्यवस्था की गई है।

सचिव सस्पेंड होना कोई नई बात नहीं

कनीना मंडी में कार्यरत मार्केट कमेटी सचिव का सस्पेंड होना कोई नई बात नहीं है इससे करीब चार साल पूर्व रबि फसल खरीद के समय पीवी न करवाने तथा खरीद कार्य में अनियमितताएं बरतने के आरोप में 7 व्यापारिक फर्म के खिलाफ पुलिस केस दर्ज कराया गया था वहीं तत्कालीन सचिव को सस्पेंड किया गया था।

सरकारी खरीद न होने पर भावांतर के चक्कर में उलझे कर्मी

अधिक बारिश होने के चलते बदरंग होने तथा खरीद मानकों पर सही नहीं उतरने पर हरियाणा सरकार बाजरे की सरकारी खरीद नहीं कर रही है। जबकि 575 रूपये प्रति क्विंटल के हिसाब से भावांअतर निर्धारित कर चुकी है। मंडी में गलत तरीके से गेटपास जारी करने तथा बाजरे खरीद की खरीद में फर्जीवाड़ा के चलते मार्केटिंग बोर्ड के अधिकारियों ने अपने स्तर पर जांच की जिसमें अंतर पाया गया। हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड के मुख्य प्रशासक मुकेश कुमार आहूजा की ओर से कनीना मंडी के सचिव-सह-ईओ मनोज पराशर और कोसली अनाज मंडी के सचिव सह-ईओ नरेंद्र कुमार को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया। मुख्य प्रशासक द्वारा की गई इस कार्रवाई के चलते अन्य अनाज मंडियों के अधिकारी सतर्क हो गए हैं।

मंडी अटेली। ग्रुप डी के कर्मी हिस्सा लेते हुए। फोटो : हरिभूमि

रोस्टर प्रणाली का अनुसरण करते हुए लिस्ट जारी की जाए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

हरियाणा ग्रुप डी संघर्ष विकास समिति (1209) ग्रुप डी प्रमोशन तथा अपने अधिकारों की आवाज उठाने के लिए कुरुक्षेत्र के पीपली स्थित ताऊ देवीलाल पार्क में शनिवार को सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में विकास समिति के प्रदेश अध्यक्ष सत्यवान सहरावत, प्रदेश महासचिव अमन भारतीय, प्रदेश कोषाध्यक्ष दीपक तंवर के नेतृत्व में अपनी मांगों को जोरदार तरीके से रखा। संघर्ष समिति के कर्मियों ने मुख्यमंत्री के निवास तक पैदल मार्च किया। महेंद्रगढ़ जिले से विभिन्न विभागों के ग्रुप डी के कर्मियों ने हिस्सा लिया। संघर्ष समिति के महेंद्रगढ़ जिले के प्रधान नरसिंह सैनी ने बताया कि उनकी प्रमुख मांगों में रोस्टर प्रणाली का अनुसरण करते हुए सीनियरिटी लिस्ट जारी की जाए और कुल स्वीकृत पदों का 50 प्रतिशत कोटा के साथ तकनीकी और गैर–तकनीकी पदों पर प्रमोशन की जाए।

ग्रुप डी कर्मियों को अवकाश का लाभ मिले

समिति के प्रदेश महासचिव अमन भारतीय ने बताया कि ऑन ड्यूटी महिला कर्मचारी के साथ किसी भी तरह के शोषण या उत्पीड़न की शिकायतों के निवारण हेतु विभागीय जांच कमेटियों में ग्रुप डी महिला कर्मचारी सदस्य का होना अनिवार्य किया जाए और सभी महिला कर्मचारियों को पोओएसच एक्ट 2013 के बारे में अवेयरनेस कैंपेन चला के अवगत कराया जाए। ग्रुप डी कर्मचारियों को फेस्टिवल एडवांस ओर व्हिट लोन के तौर पर दिया जाता है, इस राशि को लोन के बजाए बोनस के तौर पर दिया जाए। सभी ग्रुप डी कर्मचारियों को राजपत्रित अवकाशों का लाभ दिया जाए। प्रायः यह देखने में आता है कि राजपत्रित अवकाशों के दिन कर्मचारी से काम लिया जाता है।अनाधिकारिक तौर पर, और छुट्टी के दिन (रविवार सहित) ड्यूटी लगा दी जाती है, इसे बारे तुरंत संज्ञान लेकर जरूरी निर्देश जारी किए जाए। कर्मचारियों के आश्रितों के मेडिकल बिल्स क्लेम में आश्रितों की आय सीमा की शर्त हटाई जाए। ग्रुप डी कर्मचारियों के लिए विभागीय बदलाव हेतु दो वर्ष के अंतराल के बाद पोर्टल खोला जाए।

शहीद देश का होते हैं गौरव: एडवोकेट अतरलाल

शहीद परिवारों को पांच-पांच लाख ग्रांट देने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

विश्व के सबसे बड़े सैनिक सम्मान विक्टोरिया क्रास से सम्मानित शहीद सुबेदार रामस्वरूप सिंह की पुण्यतिथि पर उनके पैतृक गांव खेड़ी तलवाना में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। इस दौरान समाजसेवी एडवोकेट अतरलाल ने क्षेत्र के गणमान्यों के साथ शहीद की मूर्ति पर माल्यार्पण कर नमन किया। शहीद के सम्मान में सभी ने खड़े होकर एक मिनट का मौन धारण कर भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की। एडवोकेट अतरलाल ने कहा कि शहीद सूबेदार रामस्वरूप सिंह ने 1944 द्वितीय विश्व युद्ध में जापानी सैनिकों को परास्त कर विग हिल चौकी पर कब्जा कर बेजोड़ शहादत का कारनामा कर विक्टोरिया क्रास

नारनौल। शहीद रामस्वरूप सिंह की मूर्ति पर माल्यार्पण करते मुख्यातिथि।

जीतकर संयुक्त पंजाब व देश का नाम रोशन किया। उन्होंने कहा कि शहीद देश के गौरव होते हैं। शहीदों का सम्मान राष्ट्र धर्म है। उन्होंने केन्द्र व हरियाणा सरकार से जिला के सभी शहीदों के स्मारकों के रख रखाव के लिए शहीद परिवारों को पांच-पांच लाख रूपये ग्रांट देने की मांग की।

यह रहे मौजूद

इस मौके पर कप्तान मामराज साहब, कप्तान ओमपाल, सरपंच पंकज, शहीद के पौत्र रिपूद्मन व शिवकुमार, पूर्व सरपंच सुरेन्द्र सिंह, पूर्व सरपंच रिसाल पहलवान, सुरेन्द्र सिंह, चेयरमैन धूम सिंह, ठाकुर बलजीत सिंह, शिब्बू जेलदार, कैप्टन रमेश सिंह, सुरेश, सुबेदार मोतीलाल शर्मा, प्रकाश चौहान, नरेश सैन, पूर्व सरपंच रामनिवास, कैलाश, राजेन्द्र सिंह नम्बरदार, रणबीर नम्बरदार, राकेश यादव, ओमल तंवर, करतार तंवर, मास्टर रणवीर, कैप्टन रामौतार, कैप्टन चिमनसिंह, महेन्द्र जांगड़ा, मोहित, डॉ. सौरव, सक्षम, अंसज आदि उपस्थित थे।

नेशनल हाईवे नंबर 11 पर गुवानी के निकट हादसा

स्कॉर्पियो व वैग्नार कार की टक्कर में परिवार के तीन सदस्य घायल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

बीती शाम को हुए सड़क हादसे में एक ही परिवार के तीन सदस्य घायल हो गए। घायलों को नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दूसरी ओर शिकायत के आधार पर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में गांव मित्रपुरा निवासी संजय कुमार ने बताया कि वह अपनी पत्नी शारदा, बेटे नितिन उर्फ निकेत तथा बेटी रिया के साथ अपनी स्कॉर्पियो कार से गांव से गुरुग्राम जा रहा था। जब शाम करीब सवा छह बजे वह नेशनल हाइवे नंबर 11 पर गांव गुवानी से बाछौद की ओर जा रहे थे, तभी सामने से एक तेज रफ्तार

नारनौल। क्षतिग्रस्त स्कॉर्पियो।

वैग्नार कार आई। उसने अपनी गाड़ी को संभालने की कोशिश की, लेकिन वैग्नार ड्राइवर ने उसको जोरदार टक्कर मार दी, जिससे स्कार्पियो क्षतिग्रस्त हो गई।

संजय कुमार ने आरोप लगाया कि वैग्नार में चार युवक सवार थे, जिनकी उम्र लगभग 25 से 30 वर्ष के बीच थी और सभी ने शराब पी रखी थी। हादसे के बाद तीन युवक मौके से फरार हो गए, जबकि कार ड्राइवर अत्यधिक नशे में होने के कारण तुरंत नहीं उतर पाया। टक्कर के दौरान संजय कुमार, उनकी पत्नी शारदा देवी और पुत्र नितिन को चोटें आईं। बाद में मौका देखकर ड्राइवर भी भाग निकला। इस पर घटना की सूचना पुलिस को दी गई। पीड़ित संजय ने थाना सदर नारनौल में लिखित शिकायत दी और वैग्नार कार चालक और उसके साथियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने जांच शुरू करते हुए दोनों वाहनों को जब्त कर लिया है।

श्रीमद्भागवत साक्षात नारायण का है स्वरूप: पंडित बजरंग शास्त्री

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

गांव भूषण कलां मे आयोजित संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के तीसरे दिन भागवत आचार्य पंडित बजरंग शास्त्री ने भागवत कथा में बताया कि श्रीमद्भागवत साक्षात नारायण का स्वरूप है और मुक्ति प्रदाता है। घर परिवार का पालन पोषण करना हमारा धर्म है, लेकिन हमारी हर एक श्वास में प्रभु का नाम स्मरण होता रहे, यही मानव जीवन का परम धर्म है।

हम सभी को विश्वास के साथ निस्वार्थ भक्ति करनी चाहिए। शुकदेव ने बताया कि भगवान नारायण द्वारा बह्मा को चतुः श्लोकि भागवत उपदेश किया। उन्होंने बताया कि भगवान नारायण की आज्ञा से ब्रह्माजी ने सृष्टि का

नारनौल। भागवत कथा सुनते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

निर्माण आरम्भ किया और सर्वप्रथम दस प्रकार की सृष्टि निर्माण का वर्णन किया। इसके उपरांत ब्रह्माजी ने अपने शरीर से सृष्टि के पहले पुरुष मनु और स्त्री शतरूपा को महारानी को प्रकट किया और इन्ही के द्वारा आगे पूरी सृष्टि कि रचना हुई। हम सभी लोग मनु कि संतान है, इसलिये हम सभी मानव कहलाते है। मनुजी के तीन पुत्री आकुति, देवहूति, प्रसूति व दो पुत्र प्रियव्रत और उत्तानपाद का जन्म हुआ और इन्ही से सृष्टि का विस्तार हुआ। आचार्य ने भागवत कथा मे कर्दम देवहूति संवाद, कपिल व देवहूति संवाद सुनाया। आचार्यजी ने कथा मे कहा कि मनुष्य को अपने घर और समाज के कार्य करते हुए प्रभु का नाम स्मरण एवम पुण्य के कार्य भी अवश्य करते रहने चाहिए। वो व्यक्ति धन्य होता है जो प्रभु का नाम स्मरण करता है और करवाता है।

परेशानी रात में दिखाई नहीं देता, पैदल चलने वाले यात्री कभी भी गिर सकते हैं गड्ढे में

ग्रामीणों ने जल्द से जल्द नाले में ढक्कन लगवाने की मांग की

खासपुर से दुबलाना सड़क के साथ गंदे पानी के नाले पर ढक्कन नहीं, हादसों का खतरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

क्षेत्र के गांव खासपुर से दुबलाना जाने वाला रास्ता अब हादसों का प्वाइंट बन चुका है। इस टाइलों की सड़क के साथ बने नाले के गंदे पानी के नाले को ढकने के लिए भी कोई व्यवस्था नहीं की गई है। नाला खुला होने के कारण किसी भी दिन कोई बड़ा हादसा हो सकता है। यह नाला बिल्कुल सड़क के साथ बना हुआ है, जिसमें पैदल चलने वाले यात्री कभी भी गिर जाते हैं। वहीं साइकिल एवं मोटरसाइकिल सवार भी इसमें गिरकर चोटिल हो सकते हैं, लेकिन खासपुर पंचायत ने इस ओर रुख नहीं किया है। ग्रामीणों ने बताया कि

मंडी अटेली। खुला पड़ा गंदा नाला। फोटो : हरिभूमि

गांव का गंदा पानी इस सड़क मार्ग के बिल्कुल साथ लगते नाले से गांव से बाहर जाता है। इस टाइलों के सड़क के किनारे पर नाले ढक्कन नहीं होने के चलते दुर्घटनाओं का कारण बन सकता है। जिससे वाहन चालकों और राहगीरों को हो खतरा होता है। खासकर रात में जब यह दिखाई नहीं देता है। ऐसे खुले नाले दुर्घटनाओं को न्योता देते हैं। जिससे पैदल चलने वाले और बाइक सवार भी घायल हो सकते हैं। इस खुले नाले के बारे में ग्राम पंचायत को पता होते हुए भी वह उदासीन बनी हुई है। ग्रामीणों की मांग है कि जल्द से जल्द नाले में ढक्कन लगवाए जाएं ताकि लोगों को इस परेशानी से निजात मिल सके।

अभी सड़क कंप्लीट नहीं हुई

सरपंच प्रतिनिधि ने इस बारे में बेरुखा जवाब दिया। इस बारे में सरपंच प्रतिनिधि दारा सिंह से बात की गई तो उन्होंने बताया कि एक इस सड़क मार्ग पर पहले बीच-बीच में चार होदी बनी हुई थी। तीन को हमने पहले से ही ढका हुआ है। बची हुई एक को जाल लगवाना है। मिस्त्री को उसके बारे में बोला हुआ है। वहीं इस मामले में सरपंच प्रतिनिधि दारा सिंह से बात करते हुए किसी एक पंच प्रतिनिधि ने फोन पर ही गांव की समस्या के बारे में बोलते हुए बताया कि सरपंच साहब ने आपको बोला हुआ है, वह सड़क कंप्लीट नहीं हुई है, वह सड़क निर्माणधीन है। गांव की समस्याएं तो लिख रहे हो, यहां आकर सुविधा क्यों नहीं लिखते। वह खुद निर्विरोध चुना हुआ पंच प्रतिनिधि है। उसके बाद सरपंच प्रतिदिन दारा सिंह ने अपनी बात बदलते हुए बताया कि वह रास्ता ग्राम पंचायत नहीं बनवा रही है। न ही उसे नाले का कार्य ग्राम पंचायत का है।

खबर संक्षेप

मुख्यमंत्री सैनी से मिला प्रतिनिधिमंडल

भिवानी। प्रदेश मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का मिलनसार रवैया व हरियाणा के प्रत्येक क्षेत्र में समान विकस करवाने की विचारधारा अपने आप में सभी के बची यही संदेश देती है कि जितना अधिक से अधिक हो सके हम सभी मिलकर आम जरूरतमंद गरीब नागरिकों तक सुविधाओ को पहुंचाए, अगर किसी भी प्रकार की कोई समस्या किसी को हो तो उसे पूरे मनोयोग से उठाए, ये बात भाजपा ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष नवीन सैनी ने की। शनिवार को क्षेत्र के मौजिज व्यक्तियों ने मुख्यमंत्री से चंडीगढ़ पहुंचकर शिष्टाचार भेंट की।

एक शाम राधा रानी के नाम कार्यक्रम आज

भिवानी। राधा रानी सेवा मंडल के अध्यक्ष धीरज कक्कड़ ने बताया कि एक शाम राधा रानी के नाम कार्यक्रम आज रविवार को स्थानीय राम नगर स्थित पंजाबी कम्युनिटी सेंटर में आयोजित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि पहले यह कार्यक्रम हर वर्ष सेक्टर 13 में आयोजित होता है लेकिन इस बार राम नगर स्थित कम्यूनिटी सेंटर में होगा।

श्रेष्ठ विद्यार्थियों के चयन के लिए आवेदन 30 तक

भिवानी। केंद्र सरकार की सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा संचालित अनुसूचित जाति वर्ग के मेधावी विद्यार्थियों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली आवासीय शिक्षा प्रदान करने की महत्वाकांक्षी योजना श्रेष्ठा के तहत प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई है। यह योजना उन होनहार विद्यार्थियों को देश के सर्वश्रेष्ठ निजी आवासीय स्कूलों में कक्षा 9 और 11 में प्रवेश दिलाकर उनका भविष्य संवारने का एक बड़ा मौका प्रदान करती है।

सीआरसी ने विद्यालय मुखियाओं में भरा जोश

बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा के वीर शहीद कपिल देव राजकीय मॉडल संस्कृति वमा विद्यालय में कलस्टर स्तरीय बैठक हुई। सीपीआईयू बैठक में कलस्टर के अधिकतर मुखियाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। बैठक सीआरसी-कम-प्राचार्या संतोष भाकर के नेतृत्व में आयोजित हुई, जिसमें एबीआरसी राज कुमारी ने भी अपनी अहम भूमिका अदा की। सीआरसी-कम-प्राचार्या संतोष भाकर ने विद्यालय मुखियाओं को बताया कि विभाग के आदेशानुसार विद्यालय में संबंधित मीडियम अनुसार दाखिल करके शिक्षा प्रदान करनी है।

जिले की मंडियों में बाहर के अनाज की न हो खरीद: डीसी

मंडियों में बाजरा की पहुंच गेट पास व खरीद की पड़ताल को टीमें गठित

गुरु तेग बहादुर साहेब के शहीदी दिवस पर होंगे विभिन्न कार्यक्रम: डीसी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। बैठक के दौरान उपस्थित डीसी साहिल गुप्ता व अन्य पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

डीसी साहिल गुप्ता ने मार्केट कमेटी व फसल खरीद एजेंसियों के अधिकारियों के निर्देश दिए कि जिले की मंडियों में जिले से बाहर के अनाज की खरीद किसी भी कीमत पर नहीं होनी चाहिए। यदि ऐसा कहीं मिला तो संबंधित अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। वहीं डीसी ने जिले की मंडियों में अब तक विशेषकर बाजरा की पहुंच के गेट पास और खरीद की पड़ताल करने के लिए संबंधित एसडीएम की अध्यक्षता में अलग से टीमों का गठन किया है। वहीं पुलिस को राजस्थान सीमा से जिले के सड़क मार्गों पर बने नाकों पर विशेष निगरानी करने के निर्देश दिए। वहीं मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने वीसी के माध्यम से प्रदेशभर के जिलाधिकारियों के साथ बाजरा व धान आदि फसल खरीद की समीक्षा। सीएम ने गुरु तेग बहादुर साहेब के 350 वें शहीदी दिवस पर एक नवंबर से होने वाले कार्यक्रमों को लेकर जरूरी निर्देश दिए।

गेट-जे फार्म पास की होगी पड़ताल

डीसी गुप्ता शनिवार को लघु सचिवालय स्थित सभागार में फसल खरीद की समीक्षा कर रहे थे। इस दौरान एसपी सुमित कुमार और सीईओ जिला परिषद अजय चोपड़ा भी मौजूद रहे। डीसी ने निर्देश दिए कि अब कटे गेट-जे फार्म पास की पड़ताल करवाई जाएगी, जिसके लिए एसडीएम की अध्यक्षता में टीमें कार्य करेंगी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मंडी के 100 मी. दायरे में ही गेट पास कटे होने चाहिए। इससे अधिक पर गेट पास नहीं कटने चाहिए। उन्होंने कहा कि जिला के किसान को नुकसान नहीं होना चाहिए, लेकिन जिला से बाहर से हमारी मंडियों में नहीं आनी चाहिए, इसके लिए विशेषकर लोहारू, सिवानी और बहल क्षेत्र में नाके लगाए जाएं। इस दौरान कृषि विभाग के उप निदेशक डॉ. विनोद फौगाट, जिला खाद्य एवं पूर्ति नियंत्रक प्रदीप कौशिक, मार्केट कमेटी सचिव देवेंद्र ढूल सहित सभी मंडियों के सचिव, जिला खेल अधिकारी विद्यानंद यादव, उप जिला शिक्षा अधिकारी शिव कुमार तंवर सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

सेमिनार, ब्लड डोनेशन मैराथन होगी

डीसी ने बताया कि गुरु तेग बहादुर सिंह के 350वें शहीदी दिवस पर सरकार के निर्देश अनुसार सेमिनार, ब्लड डोनेशन कैंप, निबंध प्रतियोगिताएं, मैराथन आदि गतिविधियां करवाई जाएंगी, जिनमें जन प्रतिनिधियों के साथ-साथ सभी वर्गों से लोगों की भागीदारी होगी। वहीं मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने वीसी के माध्यम से प्रदेशभर के जिलाधिकारियों को गुरु तेग बहादुर के शहीदी दिवस पर होने वाले कार्यक्रमों को लेकर जरूरी निर्देश दिए।

भारतीय कबड्डी टीमों ने एशियन यूथ गेम्स में रचा इतिहास, जीते स्वर्ण पदक

लड़कियों की टीम ने ईरान को 75-25 के अंतर से हराकर स्वर्ण पदक जीता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

चरखीदादरी। गोल्ड मेडल पदक विजेता टीम। फोटो :हरिभूमि

भारतीय कबड्डी टीमों ने तीसरे एशियन यूथ गेम्स में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया है। 18 से 23 अक्टूबर तक ईसा स्पोर्ट सिटी, मनामा बहरीन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भारत की लड़कों व लड़कियों दोनों कबड्डी टीमों ने फाइनल मुकाबले में ईरान को पराजित कर गोल्ड मेडल अपने नाम किया। लड़कों की टीम ने रोमांचक फाइनल में ईरान को 35-32 के नजदीकी अंतर से हराकर स्वर्ण पदक जीता, जबकि लड़कियों की टीम ने ईरान को 75-25 के विशाल अंतर से पराजित करते हुए स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। एशियन सर्कल स्टाइल समिति के महासचिव एवं एमेच्योर कबड्डी एसोसिएशन हरियाणा के चेयरमैन ने कुलदीप ने बताया कि भारतीय टीमों ने बेहतरीन रणनीति, अनुशासन और टीम भावना के बल पर प्रतिद्वंद्वी टीमों को संघर्ष करने पर मजबूर कर दिया। ये जीत भारत की खेल क्षमता व समर्पण का उज्जवल उदाहरण है। दोनों टीमों के प्रदर्शन ने दर्शकों और खेलप्रेमियों के दिल जीत लिया।

गोल्ड मेडलिस्ट सीमा किया स्वागत

युवाओं का राष्ट्र के निर्माण में अहम योगदान : नायब तहसीलदार

नशे से दूर रहें युवा, खेलों में लें भाग : नायब तहसीलदार अशोक कुमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ तोशाम

चरखीदादरी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नायब तहसीलदार अशोक कुमार। फोटो :हरिभूमि

नायब तहसीलदार अशोक कुमार ने युवाओं से आह्वान किया कि वे नशे से दूर रहे और खेलों में भाग लें। उन्होंने कहा कि खेलों के माध्यम से युवा अपने सर्वांगीण विकास के साथ-साथ प्रदेश व देश का नाम रोशन करें। नायब तहसीलदार शनिवार को वीर शहीद हवलदार विजय सिंह राजकीय माध्यमिक विद्यालय बुशान में बाबा भैरू नाथ युवा क्लब बुशान व ग्रामीणों द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान में बोल रहे थे। सम्मान समारोह में भुवनेश्वर में आयोजित 40 वीं नैशनल जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप गोल्ड मेडलिस्ट सीमा कालीरामण को मालाओं व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर महंत सागर नाथ, ज्योति कुमारी, किसान नेता रवि आजाद, थाना प्रभारी प्रदीप कुमार, पूर्व बीडीसी रूघवीर, महताब सिंह, डॉ. सचिन, मांगेराम कालीरामण, पूर्व सरपंच महान सिहं, पूर्व सरपंच बीरसिह, पूर्व सरपंच प्रतिनिधि अनिल, जेपी हसान सहित गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

भिवानी। 180 किलोग्राम वजन उठाकर प्रथम रहने वाले विश्वास को सम्मानित करते हुए अतिथिगण व अन्य। फोटो :हरिभूमि

बेंच प्रैस प्रतियोगिता में 180 किलोग्राम वजन उठाकर विश्वास रहे प्रथम, बने बेस्ट लिफ्टर

भिवानी। स्थानीय हांसी रोड स्थित निजी जिम में शनिवार को जिला स्तरीय बेंच प्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस रोमांचक मुकाबले में खिलाड़ियों ने अपनी ताकत और समर्पण का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का सबसे बड़ा आकर्षण 120 किलोग्राम से अधिक भार वर्ग का रहा, जिसमें विश्वास उर्फ गोल्डी अहलावत ने अपनी असाधारण क्षमता का प्रदर्शन करते हुए 180 किलोग्राम का प्रभावशाली वजन उठाकर प्रथम स्थान हासिल किया। उनकी इस शानदार जीत के लिए उन्हें बेस्ट लिफ्टर के पुरस्कार से भी नवाजा गया। विश्वास ने अपनी जीत का श्रेय अपने कोच और परिवार के समर्थन को दिया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान सिर्फ उनकी मेहनत का नहीं, बल्कि मेरे गुरुजनों के मार्गदर्शन और परिवार के अटूट विश्वास का परिणाम है। उन्होंने कहा कि वे भविष्य में राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर भिवानी का नाम रोशन करने के लिए और कड़ी मेहनत जारी रखेंगे। प्रतियोगिता के समापन समारोह में हरियाणा राज्य पावर लिफ्टिंग एसोसिएशन के गणमान्य पदाधिकारी और वरिष्ठ कोच विशेष रूप से उपस्थित रहे। जिनमें हरियाणा राज्य पावर लिफ्टिंग एसोसिएशन के प्रधान राजकुमार अहलावत ने विजेता खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि खेल नगरी भिवानी में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है।

भाजपा के शीर्ष नेता आज भिवानी में सुनेंगे प्रधानमंत्री की मन की बात

भाजपा कार्यालय में संगठनात्मक बैठक का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। बैठक को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक।

शनिवार को भाजपा की महत्वपूर्ण बैठक पार्टी कार्यालय में हुई। इस बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने की, जिसमें आगामी कार्यक्रमों व संगठनात्मक गतिविधि पर विस्तार से चर्चा की। बैठक को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए बताया कि 26 अक्टूबर को पार्टी के कई शीर्ष नेता भिवानी पहुंचेंगे। उन्होंने बताया कि भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री अरूण सिंह, प्रदेश प्रभारी सतीश पूनिया और प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बड़ौली भिवानी आएंगे। जिलाध्यक्ष ने बताया कि इन वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति में पार्टी कार्यकर्ताओं एवं आम नागरिकों के साथ प्रधानमंत्री मोदी के लोकप्रिय मासिक कार्यक्रम मन की बात को सुना जाएगा। कार्यक्रम शकुंतला गार्डन में होगा। उन्होंने बताया कि मन की बात कार्यक्रम सुनने में कई बार भिवानी जिला प्रथम आ चुका है, जिसके चलते कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने भाजपा नेता भिवानी पहुंचेंगे।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर जिला महामंत्री रमेश पचेरवाल, रेखा राघव, जिला उपाध्यक्ष विशाल जीत, प्रदीप प्रजापति, राजेश जांगड़ा, शालू अरोड़ा, विनोद चावला, सोनिया अत्री, पिंकी नगर, सुनील डावर, कोषाध्यक्ष नवीन गर्ग, जिला मीडिया प्रभारी राकेश मिश्रा, सूर्य प्रताप, अंकित पालवास, इतेंद्र अत्री मौजूद रहे।

दस हजार रुपये के वाहनों के प्रदूषण चालान काटना गरीब जनता के साथ अन्याय : नरेश

नरेश तंवर।

भिवानी। केन्द्र व प्रदेश की भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों के कारण महंगाई आसमान छू रही है। वहीं दूसरी तरफ भाजपा सरकार ने प्रदुषण के नाम पर दो पहिया वाहनों के 10 से 15 हजार रुपये तक के चालान काटकर अपने खजाने को भरने का काम शुरू कर दिया है, जिसकारण इस महंगाई के दौर में आम आदमी पर दोहरी मार पड़ रही है, ये बात वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं रिटायर्ड बैंक महाप्रबंधक नरेश तंवर ने केंद्र सरकार से मोटर व्हीकल एक्ट में प्रदूषण प्रमाण पत्र से संबंधित चालानों की राशि को तर्कसंगत बनाने की मांग करते हुए कही। तंवर ने कहा कि हरियाणा प्रदेश समेत पूरे देश में दोपहिया वाहनों के 10 से 15 हजार रूपये तक के प्रदूषण चालान काटे जा रहे हैं जो पूरी तरह से अनुचित है और आम जनता पर अत्याचार है। उन्होंने कहा कि अधिकतर स्कूटी या मोटरसाइकिल की कीमत ही 20 से 50 हजार के आसपास है ऐसे में 10 हजार रूपये का चालान गरीब और मध्यम वर्ग के लिए अत्यंत अन्यायपूर्ण है। यह वर्ग पहले ही महंगाई और बढ़ते ईंधन दामों से परेशान है। ऐसे में इतनी भारी जुर्माना राशि उनकी परेशानियों को और बढ़ा रही है। उन्होंने केन्द्र सरकार से मांग करते हुए कहा कि दोपहिया वाहनों के प्रदूषण चालान की राशि वाहन की क्षमता के अनुसार तय की जाए। 100 से 150 सीसी तके स्कूटी व मोटरसाइकिल के लिए 500 से 1000 रूपये तक का चालान किया जाए। वास्तविक प्रदूषण फैलाने वाले स्त्रोतों जैसे डीजल ट्रक, फैक्ट्रियां और ईंट भट्टे पर अधिक निगरानी रखी जाए। पर्यावरण संरक्षण का उद्देश्य जनहित में होना चाहिए न कि दंडात्मक नीति बनाकर नागरिकों पर आर्थिक बोझ डालना। उन्होंने सरकार से मांग करते हुए कहा कि वे इस दिशा में सुधार करें ताकि आम नागरिक को राहत मिल सके।

47 से 50 किलो भारवर्ग में मंयक प्रथम, सौनक द्वितीय

लड़के व लड़की दोनों ही ग्रुपों में पूरे क्षेत्र से आए मुक्केबाजों ने अपनी प्रतिभा का किया प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

चरखी दादरी। प्रतियोगिता के दौरान उपस्थित खिलाड़ी व अन्य। फोटो :हरिभूमि

सांसद खेल महोत्सव के तहत विभिन्न खेलों की प्रतियोगिताओं को आयोजित किया जा रहा है। मेजबान चौक स्थित रुपाणा बॉक्सिंग क्लब परिसर में भी मुक्केबाजी स्पर्धा आयोजित की गई। लड़के व लड़की दोनों ही ग्रुपों के मुक्केबाजों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। सांसद धर्मबीर सिंह के निर्देशानुसार इन स्पर्धाओं को सुधीर चांदवास, मीडिया प्रभारी प्रविंद्र मांढी, बलवान आर्य के मार्गदर्शन में करवाया। खिलाड़ियों को सांसद के पुत्र मोहित चौधरी ने मोबाइल के जरिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। प्रतियोगिताओं की अध्यक्षता क्लब संचालक रघुवीर नंबरदार लाडावास ने की। बतौर मुख्यतिथि प्रदीप फौगाट गामडी ने शिरकत की। विशिष्ट अतिथि कुलदीप साहू रानीला ने सहभागिता की। मुकाबलों में लड़कों के भारवर्ग 47 से 50 केजी के तहत रोचक मुकाबले हुए। इसमें मंयक प्रथम, सौनक सांगवान द्वितीय व तनीश तीसरे स्थान पर रहे।

नीरज चौधरी खेल स्टेडियम में पसीना बहा रही बिहार विश्वविद्यालय की टीम

लेह लद्दाख के कारगिल मैदान में होगी आल इंडिया यूनिवर्सिटी चैंपियनशीप

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बाढ़ड़ा

बाढ़ड़ा। नीरज चौधरी युवा खेल स्टेडियम में अभ्यास करते बिहार विवि के खिलाड़ी।

बिहार यूनिवर्सिटी के कबड्डी खिलाड़ी गांव कालुवाला स्थित नीरज चौधरी युवा खेल स्टेडियम में दो सप्ताह तक पसीना बहाएंगे तथा वरिष्ठ खेल प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में आगामी माह में लेह लद्दाख के कारगिल मैदान में होने वाली स्पर्धा में आल इंडिया यूनिवर्सिटी चैंपियनशीप में शामिल होंगे। नीरज चौधरी युवा खेल स्टेडियम में संचालित कबड्डी प्रशिक्षण शिविर में ललित नारायण मिथिला दरबंगा यूनिवर्सिटी संबधित पटना बिहार राज्य की खिलाड़ियों की टीम भाग ले रही है। इसमें वरिष्ठ खेल प्रशिक्षक कोच राजीव कुमार, नरेश कुमार, संदीप सिंह, नरेंद्र लाडावास की देखरेख व कठोर प्रशिक्षण में खिलाड़ियों को नैशनल यूनिवर्सिटी गेम्स के लिए तैयार किया जा रहा है। इन सभी खिलाड़ियों को हरियाणवी खानपान व कोच का अनुभव मिलने से बहुत उत्साहित तरीके से खेल की बारिकियां समझ रहे हैं। प्रदपक कालुवाला ने बताया यह टीम २१ अक्टूबर से चार नवंबर तक प्रशिक्षण प्राप्त करेगी तथा उसके बाद सात नवंबर से ११ नवंबर तक लेह लद्दाख के प्रशिक्षण शिविर में आयोजित होने वाली आल इंडिया यूनिवर्सिटी चैंपियनशीप की कबड्डी स्पर्धा में शामिल होगी।

विद्यार्थियों को किताबी नहीं, बल्कि काबिल बनाएं शिक्षक : गुप्ता

लाला सुंदर लाल गुप्ता की स्मृति में होनहार विद्यार्थियों को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

चरखी दादरी। लाला सुंदरलाल गुप्ता को नमन करते सोसाइटी के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

दादरी पब्लिक स्कूल में महाराजा अग्रसेन एजूकेशन सोसायटी संस्थापक लाला सुंदर लाला गुप्ता की स्मृति में होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता विद्यालय चेयरपर्सन कृष्णा देवी गुप्ता द्वारा की गई। कार्यक्रम में बतौर मुख्यतिथि नगर पार्षद कुलदीप सैनी ने शिरकत की। बतौर विशिष्ट अतिथि महाराजा अग्रसेन एजूकेशन सोसायटी उपप्रधान सुनील कुमार गर्ग, कार्यकारी जिला अध्यक्ष ओबीसी मोर्चा नवीन सैनी भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। शुभारंभ विद्यालय निदेशक मुन्ना लाल गुप्ता व पूनम चंद गुप्ता सहित शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने मां सरस्वती व लाला सुंदर लाल गुप्ता के समक्ष पुष्प अर्पित कर किया गया। मंच संचालन सुनीता जांगड़ा ने किया। सभी ने लाला सुंदर लाल गुप्ता को एक नेक दिल इंसान बताते हुए उनके द्वारा स्थापित उच्च आदर्शों पर तथा उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों पर विस्तार से प्रकाश डाला। समारोह में प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सामाजिक, सांस्कृतिक व अन्य गतिविधियों में अव्वल रहने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार व मेडल देकर सम्मानित किया।

पटेल जयंती पर 31 अक्टूबर को रन फॉर यूनिटी का होगा आयोजन

मुख्यमंत्री सैनी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस से समीक्षा की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

चरखीदादरी। वीडियो कांफ्रेंस में उपायुक्त व अन्य अधिकारी। फोटो :हरिभूमि

हरियाणा सरकार गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस को राज्यभर में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाएगी। एक नवंबर से लेकर 24 नवंबर तक हरियाणा प्रदेश के चारों कोनों से चार यात्राएं निकलेंगी, जिनका समापन 25 नवंबर को कुरुक्षेत्र में होगा, जिसकी तैयारी हो चुकी हैं।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने शनिवार को चंडीगढ़ में एक उच्चस्तरीय बैठक में गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस तथा सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर आयोजित होने वाली रन फॉर यूनिटी तथा अन्य आयोजनों की तैयारियों की समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने इस दौरान धान व बाजरे की खरीद की स्थिति की भी जानकारी ली। वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आयोजित इस समीक्षा बैठक में जिला उपायुक्त डा मुनीश नागपाल सहित अन्य विभागीय अधिकारी भी जुड़े तथा आयोजन के संदर्भ में आवश्यक तैयारियों की जानकारी दी। बैठक के उपरांत विभागीय अधिकारियों की बैठक में कहा कि हरियाणा सरकार ने श्री गुरु तेग बहादुर साहिब के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में राज्यभर में चार पवित्र यात्राएं आयोजित करने का निर्णय लिया है। यह यात्राएं हरियाणा के विभिन्न जिलों से होकर गुजरेंगी, जहां श्रद्धालु और आमजन बड़ी संख्या में भाग लेंगे।

संयुक्त किसान मोर्चा के प्रतिनिधिमंडल ने डीसी से की मुलाकात

350 करोड़ रुपये के बीमा फ्रॉड को लेकर सौंपा ज्ञापन

लोहारू में किसानों के दिन रात धरने के 100 दिन हुए पूरे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। उपायुक्त को ज्ञापन सौंपते हुए पदाधिकारी।

संयुक्त किसान मोर्चा का प्रतिनिधि मंडल बर्बाद खरीफ फसल-2023 के 350 करोड़ बीमा फ्रॉड के समाधान के लिए राज्य सरकार को किसानों की तरफ से न्यायोचित अनुमोदन करने, राज्य ग्रीवेन्स उन्मूलन कमेटी में किसानों का पक्ष रखने व किसानों को पैसा दिलाने के लिए उपायुक्त साहिल गुप्ता से मिला व उन्हें ज्ञापन दिया। प्रतिनिधि मंडल में किसान सभा के नेता कामरेड ओमप्रकाश, डॉ. बलबीर ठाकन, कविता आर्य, किसान नेता रवि आजाद, अधिवक्ता अशोक आर्य, सुरेश फरटिया, रामपाल सिंघानी, विजय गौरावा शामिल थे। उन्होंने डीसी को बताया कि जिला मोनिटरिंग कमेटी भिवानी व दादरी ने 2023-24 में दोबारा बैठक करके किसानों के 350 करोड़ रुपये बीमा क्लेम को उचित ठहराया था और उस समय क्षेमा बीमा कंपनी ने कोई ऐतराज नहीं किया, लेकिन बाद में विस चुनाव आचार संहिता लगने के बाद व राज्य टेक्निकल कमेटी की तीन वर्ष की अवधि समाप्त होने के बाद कृषि अधिकारियों ने कंपनी के साथ सांठगांठ कर क्लेम उड़ा दिया।

वर्ष 2024 की सरसों के 85 करोड़ के भुगतान की मांग

उन्होंने मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव राजेश खुल्लर से भी शीघ्र राज्य ग्रवींस उन्नमूलन कमेटी का शीघ्र गठन करने व किसानों का हक दिलाने के लिए टेलिफोन किया। इससे पहले राज्य के पूर्व कृषि मंत्री जेपी दलाल ने भी मुख्यमंत्री से मिलकर किसानों की उच्च अधिकारी राजेरा खुल्लर की अध्यक्षता में बैठक करवाई थी। जिसमें रबी फसल 2024 की सरसों के 85 करोड़ रुपये का शीघ्र भुगतान करवाने, जिसका निर्णय दिल्ली सेंटर स्टेट टेक्निकल कमेटी किसानों के हक में निर्णय कर चुकी थी तथा शीघ्र राज्य ग्रीवेन्स उन्मूलन कमेटी के निर्माण का निर्णय लिया गया था। परन्तु अभी भी सरसों के 85 करोड़ का किसानों को भुगतान नहीं हुआ है। उधर इसी मुद्दे को लेकर लोहारु उपमंडल अधिकारी कार्यालय पर किसानों का दिन रात धरना के 100 दिन पूरे हो गए है। इसी तरह बाढड़ा में भी लगातार धरना जारी है। किसानों का कहना है कि जब तक उनको न्याय नहीं मिलेगा, उनका आंदोलन जारी रहेगा।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 26 अक्टूबर 2025

उड़ने के लिए तैयार फ्लाइंग कार

आसमान में उड़ते हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर को तो हम सबने देखा है। अब बस कुछ ही वर्षों में आस-पास की दूरियों को तय करने के लिए फ्लाइंग कारें भी उड़ती हुई दिखने लगेंगी। कई विदेशी कंपनियां इस दिशा में पूरी तरह रेडी हो चुकी हैं तो अपने देश में भी इस बारे में जोर-शोर से तैयारी की जा रही है। भविष्य के नए हवाई सफर पर एक नजर।

टीकैब कंपनी चीन की ई20 एयरटैक्सी

{ कवर स्टोरी / एन. के. अरोड़ा }

उड़ने वाली कारें यानी फ्लाइंग कार या रोडेबल एयरक्राफ्ट यानी ऐसी गाड़ियां, जो सड़कों पर चल भी सकें और जरूरत पड़ने पर उड़ान भी भर सकें। अब ये केवल हॉलीवुड की फिल्मों का हिस्सा भर नहीं हैं बल्कि ये हकीकत है। हां, यह बात अलग है कि अभी इसका उपयोग लोगों ने शुरू नहीं किया है। अभी ये कारें सीमित स्तर पर प्रोटोटाइप, परीक्षण, नियामक मंजूरी और टेस्ट फ्लाइट के दौर से गुजर रही हैं। अभी सड़क पर दौड़ने और उड़ान भरने वाली ये कारें, आम लोगों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन चीन, जापान, अमेरिका और यूरोप के कई देशों में ये कारें जल्द से जल्द आम लोगों के घरों के गैराज में दिखने लगेंगी।

कई स्तरों पर हो रही तैयारी: साल 2025 के अंत तक दुनिया भर में कई कंपनियां ऐसी

स्काई ड्राइव, जापान की एयरटैक्सी

इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक ऑफ एंड लैंडिंग (वीटीओएल) कारों को पूरी तरह तैयार कर लेंगी, क्योंकि इन कंपनियों की फ्लाइंग कारों की प्रगति महत्वपूर्ण चरणों में है। कुछ देशों और कंपनियों ने तो अपनी कारों की सूची भी सोशल मीडिया पर जारी कर दी है। इस समय दुनिया भर के अलग-अलग देशों में करीब 250 ऐसी कंपनियां हैं, जो उड़ने वाली कारों यानी फ्लाइंग टैक्सियों या वीटीओएल परियोजनाओं पर काम कर रही हैं। कई प्रोटोटाइप पहले ही हवा में उड़ान भर चुके हैं, कुछ मानव पायलट के साथ और कुछ बिना इंसानी ड्राइवर के। उदाहरण के लिए टर्की में सीजेरी का प्रोटोटाइप और जापान में स्काई डाइव का प्रोटोटाइप हवा में उड़ान भर चुका है। कई कंपनियां एयर टैक्सी शुरू करने की बिल्कुल व्यावहारिक योजनाएं बना चुकी हैं, तो कुछ देशों ने सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। कहने का मतलब उड़न कारें

जॉबी एविएशन, अमेरिका की ईवीटॉल

यानी, जमीन और हवा दोनों पर चलने वाली कारें भले अभी दुनिया में आम लोगों के इस्तेमाल में आना शुरू न हुई हों, पर इनके एक साथ पूरी दुनिया में इतनी बड़ी संख्या में प्रोजेक्ट काम कर रहे हैं कि दिन-रात इनके बारे में बातें होना स्वाभाविक है। इनके उज्ज्वल भविष्य को देखते हुए दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति इन कारों पर भारी निवेश भी कर रहे हैं।

कई कंपनिया हैं एक्टिव: आज दुनिया के जिन देशों में प्रमुख कंपनियां ऐसी फ्लाइंग कारें बनाने में जुटी हुई हैं, उनमें संयुक्त राज्य अमेरिका में जॉबी एविएशन ने एफएए से एयर करियर प्रमाणपत्र हासिल किया है और डेल्टा एयरलाइंस के साथ साझेदारी की है। इसी तरह आर्चर एविएशन ने भी यूनाइटेड एयरलाइंस से 10 मिलियन डॉलर प्राप्त किया है। इसी तरह जेस्टन वन नामक एक व्यक्तिगत उड़न वाहन भी अमेरिका में विकसित किया गया है, जिसकी कीमत 1 लाख 28 हजार डॉलर है और जिसे उड़ाने के लिए किसी पायलट लाइसेंस की जरूरत नहीं है। जबकि चीन एक्सपेंग एयरोहॉट दुनिया की पहली ऐसी कंपनी है, जिसने बिना पायलट के यात्री उड़ानों के लिए नियामक स्वीकृति प्राप्त कर ली है। इसने लैंड एयरक्राफ्ट करियर नामक मॉड्यूलर कार विकसित की है, जिसमें एक फोल्डेबल ईवीटीओएल है। टीकैब टैग कंपनी ने ई-20 नामक मानवयुक्त ईवीटीओएल विकसित की है। इसी तरह ब्राजील ने ईव एयर मोबिलिटी, जापान की स्काई ड्राइव और जर्मनी की लिलियम बोलोकॉप्टर कंपनियों ने भी अपनी-अपनी उड़न कारें विकसित कर ली हैं और इन सबकी हवा में उड़ने और जमीन में जरूरत पड़ने पर चलने वाली ये कारें परीक्षण और अपग्रेडेशन की प्रक्रिया से गुजर रही हैं। इन दिनों इसी काल्पनिक सच को हकीकत में बदलने के लिए विकसित देशों में दर्जनों उड़न कारें अपनी बुनियादी उड़ाने भर रही हैं या दूसरे शब्दों में ट्रेंड हो रही हैं।

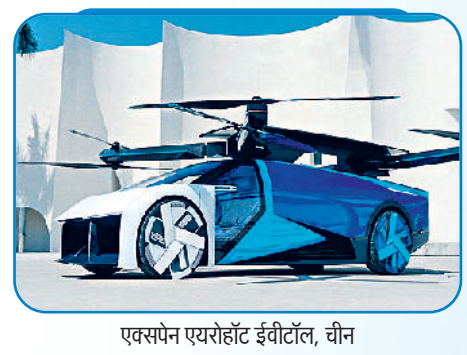

एक्सपेन एयरोहॉट ईवीटॉल, चीन

ऐसे आई सुर्खियों में: फ्लाइंग कारों की चर्चा अचानक इसलिए बढ़ी है, क्योंकि पिछले दिनों दो उड़ने वाली कारें एक फ्लाइंग शो के दौरान हवा में ही टकरा गईं और एक बड़ा हादसा हो गया। यह अलग बात है कि इसमें कोई जनहानि नहीं हुई। दरअसल, चीन के जिलिन में बीते 16 सितंबर 2025 की दोपहर को चल रहे चांगचुन एयर शो के दौरान एक्सपेन एयरोहॉट की दो वीटीओएल आपस में टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस टक्कर से एक यात्री घायल हो गया, जिसे जानलेवा चोट नहीं लगी। लेकिन इस दुर्घटना की वजह से रातों-रात पूरी दुनिया की आटोमोबाइल इंडस्ट्री में वीटीओएल कारों के सिस्टमेटिक ढंग से प्लानिंग हो रही है। लोगों को उत्सुकता है कि एयर ट्रैफिक रेगुलेशन, पायलट ट्रेनिंग, बैटरी रिलायबिलिटी, इस तरह की सभी समस्याएं एक-एक करके हल हों ताकि उड़ने वाली कारें अब फिक्शन न रह जाएं।

बहरहाल, विशेषज्ञ कहते हैं कि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सन 2030 तक दुनिया के अनेक बड़े शहरों के आसमान में हवा में उड़ान भरने वाली कारें दिखने लगेंगी। *

भारत में भी जल्द उड़ेंगी एयरटैक्सी

केवल विदेशों में ही नहीं अपने देश भारत में भी ईवीटॉल विकसित करने में कुछ कंपनियां सक्रिय हैं। डीजीसीए ने पंजाब की एक कंपनी के एयरटैक्सी मॉडल को डिजाइन अप्रूवल सर्टिफिकेट भी दे दिया है। एयरटैक्सी के टेकऑफ और लैंडिंग के लिए वर्टिपोर्ट बनाने की प्लानिंग पर भी काम किया जा रहा है। बेंगलुरु की एक कंपनी भी इस दिशा में एक्टिव है। सब कुछ प्लानिंग के अनुसार फाइनल होने पर वर्ष 2028 तक दिल्ली-एनसीआर में एयर टैक्सी का परिचालन शुरू हो सकता है। इसके बाद कोलकाता, मुंबई जैसे अन्य मेट्रो शहरों में भी एयरटैक्सी चलने की संभावना है।

{ अवेयरनेस / संध्या सिंह }

इन दिनों लगभग रोज ही साइबर फ्रॉड की अनेक घटनाएं घटित हो रही हैं। साइबर क्रिमिनल्स नए-नए तरीकों से लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। ऐसे में जरा सी लापरवाही आपका भारी आर्थिक नुकसान करा सकती है। इसलिए साइबर वर्ल्ड में हमेशा एलर्ट रहें।

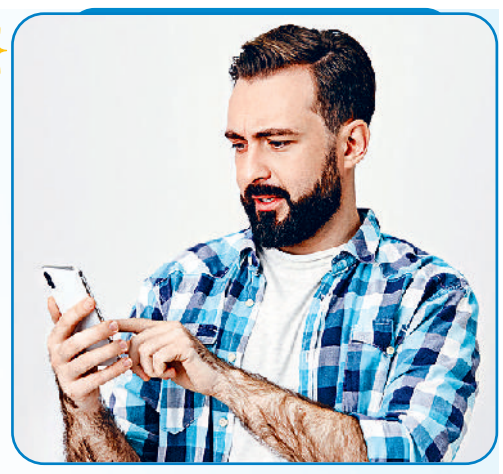

खूब हो रहा साइबर फ्रॉड

ना बरतें कोई लापरवाही

आजकल सोशल मीडिया पर साइबर तस्करी, साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी, डीपफेक में काफी बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसी धोखाधड़ी अब आम हो गई है।

सोशल मीडिया पर फ्रॉड नेटवर्क: हाल के दिनों में लोगों को व्हाट्सएप पर नकली ई-चालान मिलना, नकली बिजली, पानी, गैस, केबल के बिल मिलने जैसी चीजें आम हो गई हैं, जिनमें व्हाट्सएप पर मैसेज भेजा जाता है और उसमें यह वॉर्निंग दी जाती

है कि यदि समय पर बिल का भुगतान नहीं किया गया, तो उनका कनेक्शन काट दिया जाएगा। हड़बड़ी में लोग अकसर व्हाट्सएप में आए उस बिल पर क्लिक कर देते हैं और कुछ समय बाद उन्हें पता चलता है कि उनके खाते से काफी पैसे निकाल लिए गए हैं। यहां तक कि फेसबुक पर भी बहुत रोचक कहानियां बनाकर उन्हें डाल दिया जाता है और जब लोग उन्हें पढ़कर आगे की कहानी जानने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करते हैं, तो उस लिंक पर कई बार एडल्ट साइट्स से उनका सामना होता है या गलत लिंक पर क्लिक करने के कारण वे साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं।

हो रहा भारी नुकसान: साइबर क्राइम अब एक ऐसी समस्या के रूप में सामने आ रहा है, जो हमारा पैसा और मन की शांति दोनों को खत्म कर रहा है। साइबर अपराध पर 254वीं संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट ने इस बात का खुलासा किया है कि साइबर ठगी के जरिए 31,500 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ है। इस साल साइबर अपराधी एक साथ कई मोर्चों पर सक्रिय हैं। संसदीय रिपोर्ट भी इस बात की पुष्टि करती है कि साइबर अपराधी एक साथ कई हथकंडे आजमा रहे हैं। लोग यह समझते हैं कि इनसे बचने के उपाय, अत्यधिक कुशल हैकर्स का काम है, लेकिन इससे आम लोगों को यह समझना होगा कि उनको नेविगेट करने की क्षमता हम सबमें होनी जरूरी है।

बीते जुलाई माह में गुरुग्राम पुलिस द्वारा एक ऐसे कॉल सेंटर का भंडाफोड़ किया गया, जहां जालसाज वीआईपी नंबर्स और पुलिस स्टेशन की पृष्ठभूमि का एआई द्वारा उपयोग करके वीडियो कॉल पर कानून अधिकारी के रूप में पेश आते थे, जो लोगों को उनके नाम पर एक पैकेट में अवैध वस्तुएं होने का हवाला देकर उन्हें गिरफ्तार कर लेने के लिए डराते थे और उन्हें यह धमकी देते थे कि यदि वह तुरंत अपनी जमानत या वैरीफिकेशन के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान नहीं करते, तो उन्हें कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है। पुलिस द्वारा छापे में स्क्रीन स्क्रिप्ट और जाली आईडी मिली, इसके बाद कई गिरफ्तारियां हुईं, जिनका लिंक दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के नेटवर्क से था, जो सीधे भारतीयों को अपना निशाना बना रहे थे।

जागरूकता है जरूरी: यह सही है कि आज के दौर में साइबर अपराध इतने जटिल हो गए हैं और लोगों को ठगी का शिकार बनाने के उनके तरीके इतने दबे छिपे होते हैं कि आम लोगों में जागरूकता का अभाव होने के कारण वे सहजता से इसका शिकार हो जाते हैं। मसलन, अगर आपको कोई पुलिस अधिकारी होने का दावा करने वाले का कॉल आता है तो उनसे यह पूछा जा सकता है कि वीडियो कॉल के जरिए भला गिरफ्तारी कैसे हो सकती है? इस तरह की समझदारी और अवेयरनेस से फ्रॉड से बच सकते हैं।

बिना डरे रहें सजग: इन जटिल साइबर अपराधों के खिलाफ सुरक्षा के समाधान या तरीके इतने कठिन नहीं है, जितने हम समझते हैं। हमें हर चीज पर सवाल उठाना सीखना होगा और जीरो ट्रस्ट नीति अपनानी होगी। एक बार जब हम ऐसे मामले में जीरो ट्रस्ट नीति अपनाने लगते हैं तो साइबर सुरक्षा आसान

हो जाती है। किसी भी लिंक अटैचमेंट या मैसेज पर जाने से पहले बिना सोचे-समझे क्लिक नहीं करना चाहिए, क्योंकि साइबर जगत में हर अंजान को जांचने-परखने की नीति अपनाएं। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले सोचें, विचार करें। वेडिंग इंविटेशन या ई-चालान की पीडीएफ/जेपीईजी फाइल होनी चाहिए, न कि एपीकेएस। एपीकेएस पर क्लिक करने का ही मतलब है आप हैकर को क्लिक कर रहे हैं। किसी को भी अपना ओटीपी या यूपीआई पिन या स्क्रीन शेयर न करें। क्योंकि कानून आपको इन्हें साझा करने के लिए नहीं कह सकता। ऑड यूआरएलएस, नए हैंडल्स, मिस मैच्ड लोगो, भ्रम पैदा करने वाली ईमेल आईडी पर क्लिक न करें। अगर आपके खाते से पैसों की ठगी हो जाती है तो 1930 नंबर पर कॉल करें और अपने बैंक को तुरंत फोन करके इसके बारे में सूचित करें। कुल मिलाकर ऑनलाइन ठगी से बचने के लिए बिना डरे एलर्ट रहना जरूरी है। *

{ कविता / आरती आस्था }

छोड़ना

मां छोड़ देती है
सब कुछ
अपने बच्चे के लिए।
वही बच्चा होकर बड़ा
छोड़ देता है
मां को
अपने प्रेम के लिए।
छोड़ते हैं दोनों ही
अपने-अपने प्रेम के लिए।
पर लगाना अनुमान
है लगभग असंभव
किसका छोड़ना
और किसका छूट जाना
होता है
ज्यादा पीड़ादायक।

{ व्यंग्य / भूपेंद्र भारतीय }

लचकलाल को भी मिले नोबेल पुरस्कार

हर साल अक्टूबर के महीने में नोबेल पुरस्कार का हल्ला रहता है। इस बार भी हल्ला रहा। लचकलाल फिर नोबेल पुरस्कार के लिए बेचैन हुए। वह नोबेल पुरस्कार चाहते हैं, भ्रष्टाचार के मामले में। उनका कहना है, इस क्षेत्र में उनसे अच्छा और श्रेष्ठ कार्य किसी ने नहीं किया है, ना ही कोई कर सकता है। इस क्षेत्र में उन्होंने जितने नवाचार किए हैं, उतने तो अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश ने अपना माल बेचने के लिए विश्व शांति के क्षेत्र में भी नहीं किए होंगे।

लचकलाल का यह कहना है कि भ्रष्टाचार में गोपनीयता के मामले में उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए। वह कैसे-कैसे टेबल के नीचे से सेवा शुल्क लेकर जनसेवा करते रहे हैं, वो रिकॉर्ड बने हैं। लचकलाल भ्रष्टाचार में यूपीआई की भी सुविधा ले रहे हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार को ऑन लाइन कर दिया है। उनकी टेबल पर घूस ऑन लाइन भी ली जाती है-जल्द यह तख्ती भी लग सकती है। लचकलाल को लगता है, वे अपनी भ्रष्टाचार की सेवाओं से विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। भ्रष्टाचार को उन्होंने अब शासकीय शिष्टाचार मान लिया है। इस प्रतिभा के पीछे उन्होंने ऐसी दिव्य दृष्टि पाई है कि एक बार में ही वह अच्छे से अच्छे ईमानदार अधिकारी को देखते ही समझ जाते हैं, यह अधिकारी अपनी सेवा कितने में प्रदान करेगा? इसकी सेवा का लाभ कैसे लेना है? इसकी निष्ठा का कितना दाम लगाना है? लचकलाल यह सब अपनी भ्रष्टाचारी दिव्य दृष्टि से कुछ ही दिनों में ताड़ लेते हैं कि साहब टेबल के कितने ऊपर और टेबल के नीचे कितने तक धंसे हैं? लचकलाल ने अपनी इस दिव्य दृष्टि और कला के सहारे बहुत से नवागत अधिकारियों, कर्मचारियों को भी भ्रष्टाचार के मामले में प्रशिक्षित किया है। कोई भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि, भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह भी क्यों नहीं प्रसिद्ध बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं!

कितना ही ईमानदार व्यक्ति शासकीय सेवा में 'सेवा परमोधर्मः' की भावना से आए, लेकिन उनकी दिव्य दृष्टि उसे भ्रष्टाचार की कला बहुत ही जल्दी सीखा देती है। इस कला को सीखने के बाद वह नवागत अधिकारी भ्रष्टाचार के दूध में पताशे(बताशे) की तरह घुल जाता है। लचकलाल भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने में उसी तरह से दक्ष हैं, जैसे इन दिनों मिस्टर ट्रंप विश्व शांति की चाशनी बनाने के लिए अपनी वैश्विक चम्मच हिला रहे हैं। वह बात अलग है कि चाशनी बन नहीं रही है। इस बार भी तथाकथित विश्व शांतिदूत नोबेल पुरस्कार के लिए चम्मच हिलाते ही रह गए।

खैर! मिस्टर लचकलाल अपने अभियान में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने और उसमें से जलेबी निकालने से कोई नहीं रोक सकता है। उनके पास भ्रष्टाचार के मामले में भ्रष्टों का जनाधार है। वे अपनी इस कला से लोकतंत्र की सेवा करना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि इस कला से राष्ट्र निर्माण भी आसानी से किया जा सकता है। कम बजट में सड़कों, पुलों, सरकारी भवनों और सेवाओं का कार्य पूरा हो जाता है। भ्रष्टाचार उनके लिए सरकारी कार्यशैली का अभिन्न हिस्सा है। उसके बगैर अधिकारियों को कार्य करने में मजा नहीं आता और सरकारों को सरकार चलाने में मजा नहीं आता। लचकलाल की मानें तो वह जनता और सरकार के बीच भ्रष्टाचार, पुल का काम करते हैं। भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह क्यों नहीं बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं! उन्हें लगता है कि वह भ्रष्टाचार विषय के मामले में बुद्धिजीवी बन गए हैं। अब आखिर उन्हें क्यों नहीं इस क्षेत्र में सेवा, शोध और नवाचार के लिए नोबेल पुरस्कार मिले! *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

प्रेमानुभूति में भीगी कविताएं

प्रेम एक ऐसा विषय है, जिस पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं लेकिन कोई भी रचना इसके बारे में स्थायी या अंतिम सच साबित नहीं हो पाती। दरअसल, यह इंसानी मनोजगत में उपजने वाली भावनाओं से निर्मित ऐसी दुनिया होती है, जिसे हर इंसान अलग तरीके से अनुभूत करता है। सविता सिंह के नए कविता संग्रह 'प्रेम भी एक यातना है' की कविताएं प्रेम के ऐसे ही अनदेखे, अबूझ क्षितिज से हमारा परिचय कराती हैं। यहां उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियां बड़ी कोमलता के साथ प्रकृति और समष्टि में समाहित हो जाती हैं। इसी बिंदु पर उनकी कविताओं के व्यापक अर्थ हमारे सामने उद्घाटित होते हैं। प्रेम के जीवन में पदार्पण का मनोहारी बिंब इन पंक्तियों में देख सकते हैं, *'पूरा-पूरा दिन संगीत सा बजता रहता है आजकल/ बेजान दोपहरें भरी रहती हैं तितलियों के रंगों से/ मधुमक्खियों के पंखों से उपजती धुनों से।'* (प्रेम) इसी तरह एक अन्य कविता 'प्रेमरत' की ये पंक्तियां शरीर के स्तर से बहुत गहन मन-आत्मा के किसी तल पर घटित हो रही अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं, *'अभी हमारे पास कहने को क्या था/हम तो भाषा में थे ही नहीं/हमारे पास महज अव्यक्त आवाजें थीं कुछ/ शब्द दूर थे हमसे।'* कह सकते हैं, आज के अमानवीय होते जा रहे हिंसा से आक्रांत युग में ये कविताएं, हमारे भीतर कुछ बेहतर बचे रहने की उम्मीद कायम रखने का संबल देती हैं। *

पुस्तक: प्रेम भी एक यातना है (कविता संग्रह),
लेखिका: सविता सिंह, **मूल्य:** 199 रुपए,
प्रकाशक: राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली

{ लघुकथा / अलका जैन 'आराधना' }

प्रेरणा

आईआईटी में सेलेक्शन न होने से हताश रौनक, रेल की पटरियों के किनारे चला जा रहा था। एक पल के लिए उसके मन में खुद को खत्म करने का ख्याल आ रहा था। अचानक मम्मी के शब्द उसके कानों में गूंजने लगे, 'रेल की पटरियां रेल को गंतव्य तक पहुंचाती हैं। बेटा, इनसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा लेनी चाहिए... क्योंकि वास्तव में चलना ही जिंदगी है।'

रौनक के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह सोच रहा था कि आईआईटी में सेलेक्शन ना होना तो एक पड़ाव भर है, जीवन में और भी बहुत कुछ है करने के लिए। अब वह मुस्कुराते हुए घर वापसी का फैसला कर चुका था। घर पहुंचा तो मम्मी-पापा बेसब्री से उसका ही इंतजार कर रहे थे। दोनों ने एक-साथ उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'तुम्हारा पसंदीदा मूंग की दाल का हलवा बनाया है, इसे खाओ और नई राह पर आगे बढ़ने की शुरुआत करो। जिंदगी किसी मोड़ पर खत्म नहीं होती, नई शुरुआत कहीं से भी की जा सकती है।'

रौनक अपने मम्मी-पापा के पैरों में झुक गया। उसे लग रहा था कि रेल की पटरियों ने उसे जीवन से पलायन की नहीं जीवन को गले लगाने की प्रेरणा दे दी। *

हरिभूमि
रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 26 अक्टूबर 2025

आयोजन
वीना गौतम

राजस्थान में अजमेर के निकट पुष्कर में आयोजित होने वाला धार्मिक-सांस्कृतिक पुष्कर मेला, पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहां की भौगोलिक विशिष्टता और इससे जुड़ी धार्मिक मान्यताएं इस स्थल को और भी महत्वपूर्ण बना देते हैं। आगामी 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक आयोजित होने वाले इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

देश की धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना का संगम पुष्कर मेला

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश की आत्मा उसकी लोक-संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में बसती है। ऐसी ही लोकधर्मी परंपराओं का वाहक है पुष्कर मेला। पुष्कर मेला न केवल राजस्थान बल्कि संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का प्रतीक है। पुष्कर मेला हर साल कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है।

मेले से जुड़ी धार्मिक मान्यताएं: पुष्कर भारत का अद्वितीय नगर है। सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा का देश में एकमात्र मंदिर यहीं स्थित है। पुष्कर की धार्मिक मान्यता यह है कि ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करने के बाद यज्ञ करने के लिए एक पवित्रस्थल की खोज कर रहे थे, तब एक कमल पुष्प उनकी हथेली से गिर पड़ा और यह जहां गिरा, उस स्थान पर पुष्कर झील बन गई। इसलिए यह स्थल पुष्कर तीर्थ कहलाता है।

पुष्कर झील में स्नान करते श्रद्धालु

कार्तिक पूर्णिमा के दिन इस झील में स्नान करना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन ब्रह्माजी स्वयं झील के जल में स्नान करने के लिए आते हैं, जो व्यक्ति इस दिन यहां स्नान करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि पुष्कर मेला के समय देश के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालु और साधु-संत यहां पवित्र स्नान के लिए पहुंचते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह मेला केवल स्नान या पूजा का आयोजन नहीं बल्कि धर्म, भक्ति और लोकआस्था की जीवंत अभिव्यक्ति है। इस अवसर पर पुष्कर झील के घाटों पर होने वाले दीपदान और आरती का दृश्य भारतीय अध्यात्म का जीवंत रूप प्रस्तुत करता है।

लोकजीवन-परंपराओं का महाकुंभ: पुष्कर मेला सिर्फ भारतीय लोक-संस्कृति का ही बहुत बड़ा उत्सव नहीं है, यह पशु व्यापार का भी बहुत बड़ा मेला है। यहां समूचे भारत के ग्रामीण जीवन की जीवंत झांकी देखने को मिलती है। राजस्थान के विभिन्न जिलों से लेकर इस मेले में हरियाणा, पंजाब, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक के ग्रामीण लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा, गीत, नृत्य और हस्तशिल्प के साथ आते हैं। पुष्कर मेले में होने वाले लोकनृत्य प्रतियोगिताओं में मटकी दौड़, ऊंट सजावट, ग्रामीण खेल, लोकसंगीत, कठपुतली, नाटक और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुनें, भारत की विविधता में एकता का अद्भुत संदेश देती हैं। यह मेला वास्तव में ग्रामीण भारत की सजीव आत्मा पेश करता है। यहां महिलाएं पारंपरिक लहंगे, ओढ़नी आदि में सजी दिखती हैं और पुरुष रंग-बिरंगी पगड़ियों में सजते हैं। इसी वेशभूषा में ये लोग आयोजित होने वाले लोक गीत-संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यहां की रंग-बिरंगी भीड़ वास्तव में भारत की जीवंत संस्कृति की धड़कन है, जिसने आधुनिकता के बीच भी अपनी जड़ें मजबूती से जमा रखी हैं।

आयोजित होता है बहुत बड़ा पशु मेला

व्यापार-पर्यटन का अवसर: जैसा हम सब जानते हैं कि पुष्कर मेले में भारत का सबसे बड़ा पशु मेला भी लगता है। विशेष रूप से ऊंट और घोड़ों के व्यापार के लिए। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में पशुधन आजीविका का महत्वपूर्ण आधार है। इस मेले के दौरान यहां हजारों ऊंट, घोड़े और गाय, बिकने के लिए आते हैं। इस खरीद-फरोख्त के जरिए स्थानीय अर्थव्यवस्था को खूब बल मिलता है। इसके साथ ही इस मेले का पर्यटन उद्योग के लिहाज से भी बहुत महत्व होता है। पुष्कर मेले के दौरान देश-विदेश से लाखों सैलानी यहां आते हैं। विदेशी पर्यटक विशेषकर यहां भारतीय संस्कृति, योग, संगीत और अध्यात्म का जीवंत अनुभव करने आते हैं। इस मेले में स्थानीय हस्तशिल्प, कपड़े, गहने और लोककला की बिक्री से ग्रामीण कारीगरों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय लैंडमार्क के रूप में प्रतिष्ठित: आज पुष्कर मेला केवल एक पारंपरिक आयोजन भर नहीं है। यह वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है। भारत सरकार और राजस्थान पर्यटन विभाग ने इसे ग्लोबल फेयर के रूप में विकसित किया है। सोशल मीडिया और यात्रा चैनलों के कारण पुष्कर मेले की पहचान दुनिया के कोने-कोने में पहुंच चुकी है। पुष्कर मेले के दौरान यहां योग शिविर, कल्चरल वर्कशॉप और डेजर्ट सफारी जैसे आयोजन पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। आज जब अपनी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत बहुत करीने से प्रस्तुत कर रहा है, तब पुष्कर इस गतिविधि का महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरा है। आज पुष्कर मेला अपनी लोक-आध्यात्मिक पहचान के लिए राष्ट्रीय लैंडमार्क की ख्याति हासिल कर चुका है। यह मेला दर्शाता है कि भारतीय सभ्यता, लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति में भी फलती-फूलती है। *

अनोखा भौगोलिक स्थल भी है पुष्कर

पुष्कर अरावली पर्वतमाला के बीच में स्थित है। जहां रेगिस्तान का शुष्क भू-भाग और झील का शांत जल एक अद्भुत विरोधाभास रचते हैं। यह क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों में गिना जाता है। क्योंकि राजस्थान में स्थित यह ऐसा क्षेत्र है, जहां जल और मरुस्थल का साझा अस्तित्व देखने को मिलता है। ऐसी विविधता का दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अक्टूबर और नवंबर के महीने में पुष्कर का तापमान बेहद सुहावना होता है। इस कारण इस मौसम में यहां देश-विदेश के लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों के लिए यह मौसम और पुष्कर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण आकर्षण का जरिया बन जाती है। झील के चारों ओर फैले घाट, मंदिरों की कतारे और दूर तक फैले रेत के टीले, इस स्थान को एक आध्यात्मिक केंद्र बना देते हैं। यही कारण है कि आज के दौर में पुष्कर की प्रतिष्ठा एक वैश्विक, सांस्कृतिक स्थली के रूप में भी है।

दीपावली के बाद कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देव उठनी, देवोत्थानी या प्रबोधिनी एकादशी पर्व मनाते हैं। पुराणों में इस दिन की पूजा, व्रत का बहुत महत्व बताया गया है। इसके महात्म्य के बारे में जानिए।

अत्यंत पुण्यकारी-शुभ फलदायी
प्रबोधिनी एकादशी व्रत-पूजन

पर्व-परंपरा
प्रभा पारिक

चातुर मास वर्षा काल के चार महीनों के शयन के बाद जब देव उठते हैं, उस दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि होती है। इसी शुभ अवसर से मनुष्यों को देवताओं के आह्वान का अवसर प्राप्त होता है। इसी तिथि से मांगलिक कार्यों, जैसे गृह प्रवेश, विवाह आदि आरंभ होते हैं।

धार्मिक मान्यता: प्रबोधिनी एकादशी की मंगल बेला पर भगवान विष्णु का विवाह शालीग्राम रूप में वृंदा तुलसी के साथ किया जाता है। सुबह तुलसी के चौरे, क्यारी, गमले को साफ करके गेरू, चूने से मांड़ने अथवा रंगोली बना कर सजाया जाता है। फूल, धूप, दीप, आरती की जाती है। मौसमी फलों के साथ मूली, केला, रूई, ग्वार फली, सुआली आदि अर्पण करते हैं। शाम के समय प्रतीकात्मक रूप से घरों में, मंदिरों में तुलसी का विवाह शालिग्राम जी के साथ रचाया जाता है। इस विवाह में घर में पुत्री के विवाह में दिया जाने वाला श्रृंगार और सुहाग की वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम अपने घर-परिवार की कन्याओं के विवाह पर करते हैं। ये श्रृंगार की सामग्री किसी भी नव-विवाहिता स्त्री, पुरोहित या सुहागन को देने की प्रथा है। इस दौरान मंगल गीतों के साथ इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिस घर में कन्यादान का अवसर न मिलने की स्थिति हो, वे तुलसी विवाह को आयोजित करके कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

व्रत का महात्म्य: पुराणों में बताया गया है कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्र अश्वमेघ यज्ञों और सौ राजसूय यज्ञों के बराबर माना जाता है। जिस वस्तु या पद या आकांक्षा को प्राप्त करना कठिन लगे, इस व्रत को करने से वो सहज ही प्राप्त हो जाती है। इस दिन रात्रि जागरण का विशेष महत्व है। माना जाता है कि प्रबोधिनी एकादशी के दिन किए गए व्रत, दान-पुण्य का फल, समस्त तीर्थों की यात्रा करने, गौ, स्वर्ण, भूमि आदि के दान से मिलने वाले फल के समतुल्य होता है। इस दिन व्रत और पूजन से निःसंतान को संतान की प्राप्ति होती है। यह व्रत उद्धार करने वाला और भगवान में आस्था बढ़ाने वाला माना जाता है। इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करने से भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं। साधक के पितरों को सद्गति की प्राप्ति होती है। पिछले हजार जन्मों में किए गए पाप भी इस एकादशी को रात्रि-जागरण करते हुए श्री नारायण जप करने से नष्ट हो जाते हैं। इस दिन व्रत के दौरान श्रद्धापूर्वक 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' का जाप करना बहुत कल्याणकारी और पुण्य फलदायी होता है।

मनाते हैं कई रूपों में: प्रबोधिनी एकादशी के पर्व को अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। यही वजह है कि विभिन्न राज्यों में इसे अलग-अलग तरह से मनाते हैं। इस दिन को पवित्र मानते हुए नर के रूप में नारायण एवं नारी के रूप में नारायणी की स्तुति करते हैं। तुलसी का महत्व, हमारे स्वास्थ्य, सुख समृद्धि, वास्तु से जोड़कर देखा जाता है। गुजरात में दीपावली के पूर्व की एकादशी से देव उठनी एकादशी तक प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर घर के द्वार पर रंगोली, तुलसी पूजा और दीपमाला सजाने की प्रथा है। यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन दीपमाला के साथ पूर्ण होती है। *

विशिष्ट पेड़ / वीना

कई तरह से उपयोगी फालसे का पेड़

फालसा का वैज्ञानिक नाम ग्रेविया एशियाटिक है। यह एक छोटा झाड़ीदार पेड़ होता है, जो गर्म और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में उगता है। फालसा को अपने देश में एक लोकप्रिय फल के रूप में जाना जाता है। इसका स्वाद खट्टा, मीठा और ताजगी भरा होता है। यह पेड़, हरे, अंडाकार, मोटे और खुरदरे पत्तों वाला होता है, इसमें छोटे सफेद या हल्के गुलाबी फूल आते हैं, जबकि छोटे गोलाकार, नीले या काले रंग के फल लगते हैं।

कई राज्यों में होती है खेती: फालसे का पेड़ देश के ज्यादातर हिस्सों में पाया जाता है। मसलन, उत्तर भारत में पंजाब, हरियाणा। मध्य भारत में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश। पश्चिमी भारत में राजस्थान, गुजरात तथा पूर्वी भारत में बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल आदि में भी फालसे की खेती की जाती है। इस तरह देखें तो यह लगभग भारत के हर क्षेत्र में उगता है। दरअसल, यह गर्म और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से फलता-फूलता है। दोमट और हल्की बलुई मिट्टी में विशेष तौर पर फालसा का पेड़ तेजी से बढ़ता और विकसित होता है। अगर व्यावसायिक तौर पर इसकी खेती करें तो एक से दो मीटर की दूरी पर पौधे लगाए जाने चाहिए, समय-समय पर इसकी पुरानी टहनियों को काटते रहने से इसका विकास तेजी से होता है और पैदावार भी अच्छी होती है।

आर्थिक रूप से लाभकारी: फालसे की खेती से किसानों को कई तरह के लाभ होते हैं। फालसा के छोटे पेड़ हर साल 5 से 10 किलोग्राम तक फल देते हैं और अगर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देखें तो 8 से 10 टन फालसे का उत्पादन हो जाता है। फालसे की खेती में लागत बहुत कम आती है। क्योंकि इसे खाद पानी की उतनी जरूरत नहीं पड़ती, जैसे दूसरे फल के पेड़ों को पड़ती है। फालसा, पेड़ लगाने के पहले या दूसरे वर्ष में ही फल देने लगता है। ताजे फलों का स्थानीय बाजार भी काफी आकर्षक है। फालसे का पेड़ सामान्यतः 10 से 15 सालों तक फल देता है।

स्वास्थ्य के लिए लाभकारी: फालसे में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। जैसे- विटामिन-ए, बी-3 और सी। साथ ही इसमें पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन और फास्फोरस जैसे खनिज तत्व भी पाए जाते हैं। फालसे में एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटीमाइक्रोबिअल और एंटीइंफ्लेमेट्री गुण भी होते हैं, इसलिए फालसा की अच्छी-खासी मांग आयुर्वेदिक औषधियों में भी होती है। इसके अलावा फालसे के फल की मांग जूस, शर्बत, मुरब्बा आदि बनाने में भी होती है। *

नदी गाथा
निनाद गौतम

कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है, यह हम सब जानते हैं। लेकिन इसी के साथ सच्चाई यह भी है कि बिहार की जीवनरेखा या कहें बिहार का हर्ष भी यही कोसी नदी है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

बिहार का शोक ही नहीं हर्ष भी है कोसी नदी

बिहार का शोक और हर्ष कही जाने वाली कोसी नदी का उद्गम हिमालय की पर्वत श्रेणियों में नेपाल में होता है। 720 किलोमीटर लंबी यह नदी नेपाल में 441 किलोमीटर और बिहार में करीब 288 किलोमीटर बहती है। यह बिहार में सुपौल जिले में प्रवेश करती है और मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया, अररिया होते हुए कटिहार जिले में कुरसेला के पास गंगा में मिल जाती है।

इसलिए कहते हैं शोक: कोसी को बिहार का शोक इसलिए कहते हैं, क्योंकि हिमालय से आने वाली यह बहुप्रवाही नदी जब बिहार में प्रवेश करती है, तो इसका बहाव बहुत तेज होता है। जिस कारण यह बार-बार अपना मार्ग बदलती है। पिछली ढाई सदियों में कोसी नदी 120 किलोमीटर पश्चिम की ओर खिसककर अपना मार्ग बदल चुकी है। क्योंकि इस हिमालयी नदी में नेपाल में तीन सहायक नदियां अरुण, तामूर और सुनकोशी भी आ मिलते हैं, इसलिए जिस समय यह बिहार में घुसती है, तो इसका बहाव इतना तेज होता है कि लगभग हर साल यह नदी बिहार में बाढ़ लाने का कारण बनती है ही, यह हर साल अपने तटबंध तोड़कर प्रदेश के उत्तरी जिलों में हाहाकार मचा देती है। इसलिए कोसी को बिहार का शोक कहते हैं। इसके चलते हर साल बिहार को करोड़ों रुपए की आर्थिक हानि और काफी लोगों की जनहानि होती है।

इसलिए कहलाती है हर्ष: सच्चाई यह भी है कि एक तरफ जहां कोसी बिहार का शोक है, वहीं दूसरी तरफ यह बिहार की जीवनरेखा भी कही जाती है। क्योंकि गंगा की तरह ही हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली यह नदी हर साल बाढ़ के समय अपने साथ जो पोषक तत्वों से भरी गाद या सिल्ट लाती है, उससे उत्तर बिहार की मिट्टी बेहद उपजाऊ हो जाती है। कोसी परियोजना के तहत लाखों हेक्टेयर जमीन में सिंचाई होती है और बिहार में उत्तम दर्जे की खेती संभव होती है। यही नहीं कोसी नदी का पानी पीने और कृषि दोनो में इस्तेमाल होता है। साथ ही कोसी बिहार और नेपाल को जोड़ने वाली वह नदी है, जो सीमांचल और मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को बहुत गहरे तक प्रभावित करती है। यह नदी मिथिला और सीमांचल क्षेत्र की लोकगाथाओं और लोकगीतों का हिस्सा है। इसे मातृस्वरूपा माना जाता है और लोकगीतों और त्योहारों में कोसी का जिक्र आता है। कोसी नदी के पानी से बनने वाली विद्युत ऊर्जा से तटबंधीय सड़कें और क्षेत्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस तरह अगर कोसी नदी ने बार बार बाढ़ और तबाही दी है, तो वहीं इसी ने बिहार को उपजाऊ कृषि व्यवस्था, सिंचाई की सुविधा और कृषि आधारित समृद्ध जीवन भी दिया है।

बिहार में होता है तेज प्रवाह: जब तक कोसी नेपाल में बहती है यह इतनी बड़ी और भयावह वेग वाली नदी नहीं होती, जितना बिहार के सुपौल जिले में प्रवेश के बाद फूटती है। कोसी नदी में प्रवाहित जल की मात्रा 2166 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड है, जबकि मानसून के दिनों में इसका यही प्रवाह 18000 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड हो जाता है, इससे इसके प्रचंड वेग का अंदाजा लगाया जा सकता है। कोसी नदी का कैचमेंट एरिया लगभग 74,500 वर्ग किलोमीटर (नेपाल और भारत में मिलाकर) है। इसीलिए मानसून के मौसम में इसका जलप्रवाह देश की दो बड़ी गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के बाद सबसे ज्यादा होता है। *

बॉलीवुड / हेमंत पाल

एक समय तक ग्रामीण परिवेश और गांव की मिट्टी की सोंधी महक वाली फिल्में खूब बनती और पसंद की जाती थीं। लेकिन जैसे-जैसे व्यावसायिकता हावी होती गई और लोगों के जीवन में शहरीकरण बढ़ता गया, फिल्मी पर्दे से गांव गायब होने लगे। फिल्मों के बदलते ट्रेंड पर एक नजर।

फिल्मी कहानियों में अब नजर नहीं आते गांव

'मदर इंडिया' में दिखा वास्तविक ग्राम्य जीवन

ग्रामीण परिवेश पर बनी हिट फिल्म 'लगान'

हाल के वर्षों में आई हिंदी फिल्मों की बात करें तो उसमें गांव और ग्रामीण परिवेश की कहानियां बिल्कुल गायब रही हैं या न के बराबर ही नजर आई हैं। कथानकों से गांव विलुप्त होने का मतलब है, देश की 60% आबादी सिनेमा से गायब हो गई। अब जो फिल्में बनाई जा रही हैं, उनकी कहानियां 40% शहरी आबादी पर केंद्रित रहती हैं। इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता कि गांव के जीवन की कहानियों से हिंदी सिनेमा का बॉक्स ऑफिस समृद्ध नहीं हो सकता। लेकिन समानांतर सिनेमा का तो मूल आधार ही ग्रामीण पृष्ठभूमि होती है, उसे ही इन कहानियों का प्रतिबिंब कहा जाता है। 'अंकुर', 'पार', 'दो बीघा जमीन', 'सूरज का सातवां घोड़ा' और 'अंतर्नाद' जैसी फिल्में ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करने में सफल रहीं। लेकिन अब ऐसी फिल्में भी नहीं बनती हैं।

गांवों से दूर हो रही फिल्में: याद कीजिए कि पिछले कुछ सालों में ऐसी कोई नई फिल्म देखी, जिसमें गांव, वहां का जीवन और गांव वालों की पीड़ा नजर आई हो! हाल ही में एक फिल्म 'लापता लेडीज' जरूर आई, पर उसका कथानक गांव पर केंद्रित न होकर, बदल गई दो दुल्हनों का था। याद नहीं आता कि आमिर खान की 'लगान' के बाद ऐसी कोई फिल्म आई हो, जिसकी पूरी कहानी गांव पर केंद्रित रही हो। आज के दौर में जो फिल्में आ रही हैं, वो हाई-सोसायटी लाइफस्टाइल और षडयंत्रों के आस-पास घूमती कहानियां हैं। उनमें कॉरपोरेट कल्चर होता है, बिजनेस के जरिए साजिशें रची जाती हैं, कंपनियों को टेकओवर करने की चालें होती हैं।

'स्वदेश' में भी दिखी ग्रामीण परिवेश की झलक

आर्थिक कारण हैं जिम्मेदार: आज स्थिति यह है कि ज्यादातर फिल्में सौ, दो सौ और पांच सौ करोड़ के बिजनेस का लक्ष्य लेकर बनाई जाती हैं। कमाई की यही होड़ हिंदी फिल्मों से गांव के गायब होने का सबसे बड़ा कारण है। फिल्मकारों की नजर में गांव की कहानियों पर फिल्में बनाना कमाऊ विषय नहीं है। अब किसी फिल्म में गांव दिखाई भी देता है, तो किसी और संदर्भ में। मिसाल के तौर पर 'स्वदेश' जैसी फिल्म में ऐसी कोशिश की गई लेकिन यह ग्रामीण परिवेश की फिल्म नहीं थी, बल्कि स्वदेश वापसी पर आधारित थी। इस बीच पहलवानी पर 'दंगल' फिल्म आई, पर इसमें भी गांव मूल रूप में नहीं दिखा। कुछ साल पहले 'पीपली लाइव' आई थी, जो गांव की सच्चाई और समस्याओं वाली फिल्म थी। इसमें किसानों के लिए बनी योजनाओं को बाबुओं और अफसरों द्वारा हड़पने का जिक्र ज्यादा था। लेकिन बड़े तबके को यह फिल्म समझ में ही नहीं आई सो आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं रही।

ग्रामीण फिल्मों का था सुनहरा दौर: सिनेमा का एक दौर ऐसा भी आया था, जब गांव और गांव वाले ही सिनेमा की पहचान हुआ करते थे। लेकिन जैसे-जैसे सिनेमा का बाजार बढ़ा, परदे से गांव गायब होते गए। फिल्मों का इतिहास टटोला जाए, तो शुरुआती फिल्मों का कथानक गांव की पगडंडियों से होकर ही गुजरा। वी. शांताराम की 'दो बीघा जमीन', विमल रॉय की 'यादगार' और 'बंदिनी,' राज कपूर की 'आवारा', 'श्री 420' और 'बूट पॉलिश' ग्रामीण परिवेश की ऐसी फिल्में थीं, जिन्होंने देश और दुनिया को वहां की समस्याओं और उनके जीवन से रूबरू करवाया था। गांव के जीवन पर बनीं इन फिल्मों में एक अलग सी महक होती थी।

धीरे-धीरे दूर हो गई गांव की महक: सिनेमा के परदे से गांव की मिट्टी की सौंधी महक ही नहीं, लोकगीत भी गायब हो गए। यह दौर एक दो सालों में नहीं आया। 80 के दशक के बाद से ही फिल्मकारों ने धीरे-धीरे गांवों की धूलभरी पगडंडी को छोड़ दिया था। फिल्मों में खेत-खलिहान, लहलहाती फसलें, हल चलाते किसान, खेत जोतते ट्रैक्टर, गांव की चौपाल और वहां की पंचायतें गायब हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म की कुछ वेब सीरीज में गांव जरूर दिखाई दिए पर उनका फोकस अपराध और अपराधियों पर फोकस होता है। वास्तव में ग्रामीण इलाकों, गांव की कहानियों और किसानों के किरदार में निर्देशक, निर्माता और यहां तक कि दर्शकों की भी रुचि नहीं है।

अब ट्रेंड पर बनती हैं फिल्में: अब तो यह हालात हैं कि गांव का जीवन परदे से लगभग गायब ही हो गया है। अब तो एक फार्मूला हिट होते ही उस जैसी फिल्में बनने लगती हैं। आजकल यही ट्रेंड बन गया है। लेकिन किसी फिल्मकार ने 'लगान' की सफलता के बाद भी

रामगढ़ गांव की पृष्ठभूमि पर बनी 'शोले'

उसका अनुसरण नहीं किया। ब्लॉक बस्टर सफल हिंदी फिल्म 'शोले' वास्तव में रामगढ़ गांव की कहानी थी। लेकिन इस फिल्म में भी गांव वास्तविक रूप में नहीं था। जो गांव था, वो डाकू गब्बर सिंह और बदला लेने वाले ठाकुर साहब के बीच कहीं गुम हो गया था।

अब तो ग्रामीण जिंदगी और वहां के रीति-रिवाजों पर फिल्में बनाने के लिए पहचाने जाने वाले राजश्री प्रोडक्शंस भी संयुक्त परिवारों और उसकी साजिशों की कहानियों पर मल्टीस्टारर फिल्में बनाने लगा है। 'नदिया के पार', 'बालिका वधु' और 'गीत गाता चल' जैसी बेहतरीन फिल्में बनाने वाली यह फिल्म निर्माण कंपनी भी गांव से शहर पहुंच गई है। दरअसल, सारा मामला व्यावसायिकता के खेल का है। ऐसे में भला कौन पिछड़ना चाहेगा। इसीलिए फिल्मी पर्दे से गांव दूर होते जा रहे हैं। *